ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 15 जुलाई 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 15 जुलाई 2018 से 21 जुलाई 2018

आषाढ़ शु. – 03 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 28, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

दुर्गापुर में मनाया गया योग दिवस एवं वृक्षारोपण पर्व

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पश्चिम बंगाल के अंतर्गत सभी डीएवी विद्यालयों के लगभग 6000 विद्यार्थियों ने एक साथ योग करके योग दिवस मनाया। योग करने के पश्चात् विद्यार्थियों ने स्वतः ही योग को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प लिया।

आर्य समाज डीएवी मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में वृक्षारोपण पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्यावरण शुद्धि के लिए **'वृहद् यज्ञ'** का आयोजन किया गया। यज्ञ की मुख्य यजमान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पश्चिम बंगाल की प्रधाना श्रीमती पापिया मुखर्जी रहीं। यज्ञ के पश्चात् प्रधाना महोदया ने छात्रों और प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए वृक्षों का हम सबके जीवन में महत्त्व समझाते हुए छात्रों को संकल्प करवाया और सभी को प्रेरित किया कि वे सब अपने जन्मदिन के अवसर पर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएँ एवं उपहार स्वरूप दूसरों को भी प्रदान करें। यज्ञ के पश्चात् करीब 11.00 बजे विशिष्ट अतिथि के रूप में आए हुए असिस्टेंट लेवर कमिश्नर (सेंट्रल) प्रशान्त के पाजाई ने प्रधाना महोदया के साथ विद्यालय के बाहर जाकर भी वृक्षारोपण किया। अंत में सिटी सेंटर स्थित जंक्सन मॉल के आस–पास सहित दुर्गापुर के अन्य स्थानों पर भी 200 पौधे साधारण लोगों को वितरण किए और जगह–जगह वृक्षारोपण भी किया।

कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रधाना महोदया ने सबको धन्यवाद प्रदान करते हुए कहा कि हम वृक्षारोपण का कार्यक्रम केवल दिखावा के लिए न करें बल्कि इसे अपने जीवन में कार्यकारी रूप भी दें। अंत में उन्होंने **पेड़ लगाओ धरती बचाओ** का नारा दिया और शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में यज्ञ का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय में नवनिर्मित जनरल ऑफिस ब्लॉक के उद्घाटन के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि डीएवी मैनेजिंग कमेटी के वाईस प्रेजिडेंट तथा मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन रिटायर्ड जस्टिस एन.के. सूद, सेक्रेटरी डॉ. एस.आर. अरोड़ा तथा श्रीमती अरोड़ा उपस्थित थे। टीजिंग व नॉन–टीचिंग स्टाफ सदस्यों ने यज्ञ में आहुतियाँ डाली तथा परमपिता परमात्मा से सभी के मंगल व कल्याण की कामना की। प्राचार्या डॉ. सरीन ने अपने संबोधन में कहा कि हमें हर व्यक्ति की अच्छाइयों की प्रशंसा करनी चाहिए तथा उसके गुणों को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। ऑफिस सुपरिटेंडेंट अमरजीत खन्ना ने बीरबल की एक कहानी के माध्यम से सभी को समझदारी से निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि इसको अपने जीवन में धारण करके अपने ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। श्रीमती सुनीता धवन ने अपनी मधुर वाणी में वेद मंत्रों का उच्चारण किया। प्राचार्या डॉ. सरीन ने जस्टिस सूद के समूह स्टॉफ की ओर से जन्मदिवस की बधाई देते हुए ईश्वर से उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 15 जुलाई 2018 से 21 जुलाई 2018

दोनों हाथों से भर-भरकर दें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथ्विया:, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यै:, आप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्।।

अथर्व 7.26.8

ऋषि: **मेधातिथि:**। देवता **विष्णु:**। छन्द: **त्रिष्टुप्**।

● (**विष्णो**) हे सव्रव्यापक परमात्मन्! (**दिव**) द्युलोक से (**उत वा**) और (**पृथिव्या:**) पृथिवी–लोक से [तथा] (**विष्णो**) हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! (**मह:**) महनीय (**उरो:**) विस्तीर्ण (**अन्तरिक्षात्**) अन्तरिक्ष–लोक से (**बहुभि:**)वहुत– से (**वसव्यै:**) ऐश्वर्य–समूहों से (**हस्तौ**) दोनों को (**पृणस्व**) भर ले। (**दक्षिणात्**) दाहिने हाथ से (**आ प्रयच्छ**) दान दे (**उत**) और (**सव्यात्**) बाएँ से [भी] (आ [प्रयच्छ]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व–ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अत: तुम धन–कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अत: हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने–बाएँ दोनों हाथों से भर–भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु–लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष–लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण–वायु और अमृतमय वृष्टि–जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथ्वी–लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु–लोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी–लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि–पर्यन्त सब ढ़ांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन–यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त–पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य–क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान–प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों–सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु–लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने **"जीवात्मा की कहानी"** पर कथा सुनाते हुए कहा आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली यह वह पुरी है, जिससे कोई जीत नहीं सकता। इसमें एक चमकते हुए प्रकाश में परमात्मा के प्रकाश से आवृत वह आत्मा बैठा रहता है, जो अपने–आप में सुख–रूप है। **"ओ३म् की महिमा"** पर कथा सुनाते हुए कहा '' सब वेद जिस महान् पद का वर्णन करते हैं, सब तपस्वी जिसकी बात कहते हैं, जिसकी इच्छा से ब्रह्मचारी अपना व्रत धारण करते हैं, उसे संक्षेप में तेरे सामने कहता हूँ–ओ३म् है वह।'' वास्तव में यही वह अक्षर है, जो ब्रह्म है। ''इसका आसरा सबसे बड़ा है। इसका आसरा लेनेवाला ब्रह्मलोक में आनन्द और महिमा को प्राप्त करता है।

आगे पढ़ेंगे 2 लघु कथाएँ

आत्मा की ज्योति

कश्मीर में कुकरनाग एक सुन्दर स्थान है। नाग कहते हैं झरने को और कुकर कहते हैं कुत्ते को, कुत्ते की भांति भौंकता हुआ, ध्वनि करता हुआ पानी कितने ही स्थानों से वहाँ बहता है। मैं वहाँ ठहरा हुआ था। एक दिन झरने से ऊपर पहाड़ पर चला गया। काफी आगे जाकर देखा कि एक सुन्दर मकान बना है। उसके दालान में एक सुन्दर कश्मीरी युवक बैठा है। मैंने उसके पास जाकर पूछा–''क्यों भाई! यह सामनेवाली पगडंडी कहाँ को जाती है?''

उसने मेरी ओर देखा, वहीं चुपचाप बैठा रहा। मैंने समझा, शायद उसने मेरी आवाज़ को सुना नहीं और मेरी बात को समझा नहीं। अत: तनिक ऊँची आवाज़ में फिर पूछा–''यह मार्ग कहाँ जाता है,''

वह अब भी नहीं बोला। हाँ, मकान के अन्दर से एक बूढ़े व्यक्ति ने आकर कहा–''क्या बात है?''

मैंने कहा–''मैं इस युवक से पगडंडी के बारे में पूछ रहा था, परन्तु यह मेरी बात का उत्तर ही नहीं देता।''

अन्दर से आनेवाले वृद्ध ने कहा–''कैसे देगा उत्तर? यह तो बहरा है, सुनता ही नहीं। गूँगा है, बोल भी नहीं सकता। अन्धा है, देख भी नहीं सकता।''

मैंने दु:ख के साथ उस युवक की ओर देखा जो अब भी चुपचाप बैठा था। वृद्ध ने कहा–''ठीक समय पर सो जाता है। ठीक समय पर जाग उठता है। पशुओं के साथ सामनेवाले मैदान में चला जाता है। शाम को वापस आता है। इतना ही कार्य कर सकता है। आँखें होने पर भी देखता नहीं। कान होने पर भी सुनता नहीं। जिह्वा होने पर भी बोल नहीं सकता।

उस समय मुझे उपनिषद् की कथा याद आई। महर्षि याज्ञवल्क्य के पास महाराज जनक बैठे थे; बोले–''महर्षि! मेरे मन में एक शंका है। हम जो कुछ देखते हैं, वह किसकी ज्योति से देखते हैं?''

महर्षि ने कहा–''यह क्या बच्चों वाली बात कहते हैं आप? प्रत्येक व्यक्ति जानता है। कि हम जो कुछ देखते हैं, वह सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं।''

जनक बोले–''सूर्य अस्त हो जाता है, तब हम किस प्रकाश से देखते हैं?''

महर्षि बोले–''चन्द्रमा के प्रकाश से।''

जनक ने कहा–''जब चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हों, अमावस के बादलों से भरी अँधेरी घोत रात हो, तब?''

महर्षि ने कहा–''तब हम शब्दों की ज्योति से देखते हैं। विशाल वन है। चहुँ ओर अँधेरा है। पथिक मार्ग भूल गया है। वह आवाज़ देता है–''मुझे मार्ग दिखाओ! तब दूसरा व्यक्ति दूर खड़ा हुआ उस शब्द को सुनकर कहता है–'इधर आओ, मैं मार्ग पर खड़ा हूँ। और वह व्यक्ति शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुँच जाता है।''

जनक ने पूछा–'महर्षि! और जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते हैं?''

महर्षि बोले–''तब हम आत्मा की ज्योति से देखते हैं। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं।''

''और यह आत्मा क्या है?'' राजा जनक नू पूछा।

ऋषि ने उत्तर दिया–

योऽयं विज्ञानमय: प्राणेषु हृदयस्तज्ज्योतिपुरुष:।

''यह जो विशेष ज्ञान से भरपूर, जीवन और ज्योति से भरपूर है, जो हृदय में जीवन है, अन्त:करण: में ज्योति है और सारे शरीर में विद्यमान है, यही आत्मा है।''

आत्मा को खोजो भाई!

बारह यात्री थे। वे एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। आगे बढ़े तो एक नदी

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

क्या बिना ईश्वर सृष्टि का बनना व इसका संचालन सम्भव है?

● मनमोहन कुमार आर्य

हम जिस सृष्टि में रहते हैं वह विशाल ब्रह्माण्ड का एक सौर्य–मण्डल है। इस सौर्यमण्डल में मुख्यतः एक सूर्य, हमारी पृथिवी और ऐसे व इससे भी बड़े अनेक ग्रह तथा हमारी पृथिवी का एक चन्द्र व अन्य ग्रहों के चन्द्र के समान अनेक छोटे व बड़े उपग्रह हैं। वैदिक गणना के अनुसार यह सृष्टि विगत लगभग 1.96 अरब वर्षों से विद्यमान है। सूर्य के बारे में वैज्ञानिक जानकारी के अनुसार यह अपनी परिधि पर घूम रहा है। इसका परिमाण वा भार 1.98910 की पावर 30, किग्रा. है। सूर्य गोलाकार है तथा इसकी त्रिज्या 696,000 किलोमीटर है। हमारे इस सूर्य में हमारी लगभग 109 पृथिवियाँ समा सकती हैं। सूर्य की परिधि लगभग 43,66,813 किमी. है।

पृथिवी व चन्द्र के बारे में जो जानकारी उपलब्ध है उससे यह अनुमान होता है कि यह महद् कार्य बिना कर्ता व रचयिता के सम्भव नहीं है। हमें यदि अपने घर में आटे की रोटी बनानी है और इसके लिये सभी सामग्री एक स्थान पर सुलभ है तब भी बिना किसी चेतन कर्ता के यह स्वमेव बन नहीं सकती। चेतन कर्ता हो तो थोड़े से समय में रोटी बन जाती है। अतः यह सृष्टि जिसमें असंख्य सूर्य, पृथिवियाँ, चन्द्र व तारे आदि हैं, उनके स्वयमेव बनने का विचार वा मान्यता कपोल कल्पित ही कही जा सकती है। यह मान्यता वैज्ञानिक तो कदापि नहीं हो सकती। यदि कोई मानता है तो यह उसकी बुद्धि का दोष है। सूर्य और पृथिवी के मध्य दूरी 149,600,000 किमी. है। यह दूरी इस दूरी से कम वा अधिक होती तो हमारे सूर्य व पृथिवी का अस्तित्व सम्भव न होता। पृथिवी सूर्य के समक्ष जिस कोण पर झुकी हुई है वह न्यूनाधिक होता तो पृथिवी पर जो ऋतुएँ होती हैं वह सम्भव न होतीं। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं यह सृष्टि व ब्रह्माण्ड स्वयमेव नहीं बना है अपितु किसी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, चेतन व आनन्दस्वरूप सत्ता जिसे ईश्वर व परमात्मा का नाम दिया जाता है, उसकी कृति है। वेदों में इसके लिए कहा है **"पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।"** अर्थात् हे मनुष्य! तू ईश्वर की बनाई सृष्टि को देख, जो न कभी पुरानी होती है और न नष्ट होती है अर्थात् यह प्रवाह से अनादि व अनन्त स्वरूप वाली है।

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जिस ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है, उस ईश्वर का स्वरूप कैसा है? इसका उत्तर ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में दिया है जिसे हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। **ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।** इसमें हम यह भी जोड़ सकते हैं ईश्वर इस सृष्टि को इसके उपादान कारण सत, रज व तम गुणों वाली सूक्ष्म प्रकृति से बनाता है। यह प्रकृति भी ईश्वर व जीव के समान अनादि व नित्य है। ईश्वर सृष्टि की रचना अपनी सामर्थ्य को प्रकट करने और असंख्य जीवों को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल देने के लिए करता है। यदि वह ऐसा न करे तो जीवात्मायें मनुष्य आदि जन्म लेकर जो सुख भोगती हैं वह उससे वंचित हो जायें। मनुष्य चेतन प्राणी है। वह मनुष्य जन्म लेकर ज्ञान प्राप्त करता है और अपने ज्ञान के अनुसार कार्य करता है। ईश्वर को भी सृष्टि को रचने, उसका संचालन व पालन करने का ज्ञान एवं अनुभव है, अतः उसका सृष्टि की रचना करना व उसका संचालन व पालन उसका स्वाभाविक गुण, कर्म व स्वभाव है।

प्रश्न हो सकता है कि ईश्वर इतना विशाल संसार कैसे बनाता है? इसका उत्तर है कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, धार्मिक स्वभाव वाला, अनादि व अमर सत्ता है। यह सृष्टि प्रवाह से अनादि है। अर्थात् इसकी उत्पत्ति, पालन व प्रलय आदि अनादि काल से होता आ रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। सृष्टि से पूर्व प्रलय होती है और प्रलय के बाद ईश्वर सृष्टि करता है। यह चक्र सदा सर्वदा चलता रहता है। यह सृष्टि पहली बार नहीं बनी है। इससे पूर्व अनन्त बार बन चुकी है। आगे भी यही क्रम अनन्त काल तक जारी रहेगा। ईश्वर द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के लिए ऋग्वेद के दसवें मण्डल का नासदीय सूक्त पढ़ना चाहिये। उससे सृष्टि की रचना पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। यह भी जानने योग्य है कि चेतन तत्त्व ज्ञान व कर्म दो प्रकार की शक्तियों वा गुणों से युक्त होता है। संसार में ईश्वर व जीव दो प्रकार की चेतन सत्तायें हैं। यह दोनों अनादि व नित्य हैं। इनका नाश कभी नहीं होगा। ईश्वर संख्या में एक है और जीव संख्या में अनन्त हैं। अनन्त संख्या जीवों की अल्पज्ञता के कारण कही जाती है जबकि ईश्वर के ज्ञान में जीव असंख्य होते हुए भी सीमित हैं वा उनकी गणना निश्चित है।

यदि ईश्वर है तो उसकी विद्यमानता का कोई प्रमाण भी होना चाहिये। इसे हम ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में दिये गये उदाहरण से समझ सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में कहा है कि मनुष्य जब शुभ व परोपकार आदि के कर्म करता है तो उसे ऐसे कार्य करने में आनन्द, उत्साह व प्रसन्नता का अनुभव होता है। वह इन कामों को निर्भय होकर करता है। इसके विपरीत वह जब चोरी, जारी व बुरा काम करता है तो उसकी आत्मा में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती है। इसका कारण क्या है? ऋषि दयानन्द बताते हैं कि आत्मा में इन अनुभूतियों का कारण आत्मा के भीतर ईश्वर की उपस्थिति को सिद्ध करता है। ईश्वर अच्छे काम करने पर जीवात्मा को प्रोत्साहित कर उसे प्रसन्नता देता है और बुरा काम करने पर उसे रोकता है और इसके लिए वह उसकी आत्मा में भय, शंका व लज्जा को उत्पन्न करता है। यह ईश्वर के अस्तित्व व उसका आत्मा के भीतर विद्यमान होना सिद्ध करता है। यदि ईश्वर न होता तो आत्मा में यह दो विपरीत प्रकार के भाव उत्पन्न न होते।

यदि सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है तो फिर मनुष्य आदि सभी प्राणियों को भी ईश्वर ने अपने विधान के अनुसार अपनी व्यवस्था से ही बनाया व उत्पन्न किया है। यह कथन व मान्यता तर्क व युक्तिसंगत होने से सत्य है। ईश्वर ही सृष्टि व इसमें सभी प्राणियों की सृष्टि करता है। वह ऐसा क्यों करता है? इसका उत्तर है कि वह जीवात्माओं को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों का फल देने के लिए ऐसा करता है। सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण भी जीवों को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों के फल वा सुख–दुःखादि प्रदान करना ही है। ईश्वर चेतन सत्ता है। उसने सृष्टि को बनाया व प्राणियों को उत्पन्न किया है। यदि इस मान्यता को स्वीकार कर लिया जाये तो फिर यह प्रश्न भी उपस्थित होता है कि ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में ही मनुष्यों को बोलने के लिए भाषा और उसके कर्त्तव्य व अकर्त्तव्यों सहित इस सृष्टि के प्रमुख रहस्यों का ज्ञान भी अवश्य देना चाहिये था। यह शंका व प्रश्न उचित है। ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में संस्कृत भाषा का ज्ञान दिया और इसी भाषा में सृष्टि एवं मनुष्य के कर्तव्यों का ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से चार वेदों का ज्ञान देकर कराया है। ऋषियों की कृपा से सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान आज भी उपलब्ध व सुरक्षित है। चार वेद आज न केवल मूल संहिता रूप में अपितु ईश्वर प्रदत्त चार वेदों के मन्त्रों के हिन्दी व अन्य भाषाओं में अर्थों सहित विद्यमान हैं। वर्तमान में इसका श्रेय ऋषि दयानन्द और उनके अनुचर विद्वानों को है। वेद में सृष्टि विषयक ज्ञान तो है ही साथ में मनुष्य के कर्तव्य कर्मों का भी व्यापक रूप से ज्ञान है। इससे ईश्वर का होना व उसका सृष्टि रचना करना व वेदों का ज्ञान देना सिद्ध होता है।

ईश्वर के मुख्य कार्यों पर विचार करें तो यह ज्ञात होता है कि ईश्वर सृष्टि की रचना करता है, उसका पालन करता है तथा सृष्टि की अवधि पूरी होने पर प्रलय करता है। वह अमैथुनी सृष्टि कर इस प्राणी सृष्टि का आरम्भ करता है और मनुष्यों को वेदों का ज्ञान देता है। ईश्वर सभी प्राणियों को उनके किये हुए कर्मों का फल देता है। मनुष्य का कोई भी कर्म ऐसा नहीं होता जिसका उसे ईश्वर वा उसकी व्यवस्था से ठीक–ठीक फल प्राप्त न हो। मनुष्य का जन्म व उसकी मृत्यु सहित अन्य सभी प्राणियों के जीवन व मरण की व्यवस्था भी परमात्मा के द्वारा ही होती है। जीवात्मा सत्य, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य व अविनाशी है। अतः इसके अतीत में असंख्य बार जन्म व भविष्य में भी जन्म व मृत्यु का होना तर्क से सिद्ध है। यह जन्म–मृत्यु–पुनर्जन्म उसे ईश्वर से ही प्राप्त होती आ रही है और भविष्य में होंगी। यदि हम ईश्वर का साक्षात् करना चाहें तो हम वेद, वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय, वेद के विद्वानों के प्रवचन व विचार सुनकर कर सकते हैं। योग दर्शन की शरण में जाकर योगाभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त कर हम सृष्टिकर्ता ईश्वर का साक्षात्कार वा प्रत्यक्ष भी कर सकते हैं। इस प्रयोजन को सि) करने के लिए ही ;षि दयानन्द जी ने 'सन्ध्या' की पुस्तक रची है। अनुमान है कि वह स्वंय भी इसी विधि से सन्ध्या करते रहे होंगे और इससे ही उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार भी किया था। यह भी जान लें कि एक बार ईश्वर का साक्षात्कार हो जाता है तो वह मृत्यु पर्यन्त बार–बार किया जा सकता है। हमारे योगी व ऋषि ऐसा करते रहे हैं। यदि हम योग व सद्कर्म किसी कारण से करना छोड़ देते है तो फिर ईश्वर का प्रत्यक्ष होना बन्द हो सकता है।

ईश्वर के विषय में हमने जो विचार किया है वह ईश्वर के होने पर ही सम्भव है। यदि ईश्वर न होता तो उसका विचार कैसे होता? अर्थात् नहीं हो सकता था। यदि ईश्वर न होता तो न सृष्टि होती, न जीवों का जन्म व मरण होता और न हम सुख भोग सकते थे। हम सब वस्तुतः ईश्वर के ऋणी हैं। ईश्वर का सत्यस्वरूप व उपासना की विधि वेद व आर्यसमाज से ही प्राप्त होती है। अतः सभी मनुष्यों को वेद और आर्यसमाज की शरण में आकर अपने जीवन का कल्याण कर इस जीवन में अभ्युदय और मृत्य होने पर निःश्रेयस को प्राप्त करना चाहिये। ओ३म् शम्।

196/चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
चलाभाष : 09412985121

राष्ट्र चेतना के विविध विचार-बिन्दु

● रामनिवास 'गुण ग्राहक'

एक बात प्रत्येक राष्ट्र के समझदार नागरिक हो कभी नहीं भूलनी चाहिए कि हमारी सुख-शांन्ति और सुरक्षा राष्ट्र की सुरक्षित सीमाओं के कारण ही है। हमारी स्थिति एक वृक्ष पर बने हुए घौंसले में रहने वाले पक्षियों जैसी है। पक्षियों का जीवन और उनका घौंसला तभी तक सुरक्षित है, जब तक कि पेड़ सुरक्षित है, अगर कोई पेड़ की जड़ें काट रहा हो तो पक्षी अपने घौंसले को सुरक्षित समझने की भूल नहीं करता, लेकिन मानव कहलाने वाले कई बार राष्ट्र की सीमाओं की असुरक्षा को गम्भीरता से न लेने की भूल करते दिखते हैं। ऐसे अल्प बुद्धि वाले लोग भारत-पाकिस्तान के बँटवारे के कारण अपना सब कुछ छोड़-त्यागकर उधर से इधर आये हैं, उनके अनुभव सुन लें।

निःसन्देह राष्ट्र की सुरक्षित सीमाएँ ही देशवासियों की सुख-शान्ति व सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। किसी राष्ट्र की सीमाएँ भी केवल शासक या सेना से सुरक्षित हो जाएँ, ऐसा मानना एक भयंकर भूल है। देश के प्रत्येक नागरिक का पहला कर्तव्य यह है कि वह स्वयं को राष्ट्र का सक्रिय सैनिक समझे तथा शासक की ऐसी कोई असावधानी या भूल दिखे जो सुरक्षा के लिए घातक हो तो उसका संज्ञान लेकर शासक को सावधान अवश्य करे। भारतीय संस्कृति और साहित्य की परस्पर रही है कि हमने राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि धर्म माना है। कौटिल्य का बड़ा स्पष्ट आदेश है- **'सर्वे धर्माः राजधर्माणि प्रविश्यन्ते"।** अर्थात् हमारे समस्त धर्म (कर्त्तव्य) राजधर्म (राष्ट्रीय कर्त्तव्यों) में समाहित हो जाते हैं। पाठक एक बात मन-मस्तिष्क में गाँठ बाँधकर रख लें कि व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो धर्म शब्द का हमारे वैदिक साहित्य में मुख्य अर्थ कर्त्तव्य ही है। ईश्वर सम्बन्धी हमारी मान्यताएँ प्रायः अध्यात्म नाम से पुकारी जाती हैं। वेद, रामायण, गीता, मनुस्मृति व महाभारत में धर्म शब्द का अर्थ प्रायः कर्त्तव्य ही है। धर्म शब्द से दूरी बनाए रखने वाले या चिढ़ने वाले अपनी चिन्तन-शैली में संशोधन कर लें।

राजनीति शब्द भी अपने आप में बहुत अच्छे अर्थ वाला है। यह दो शब्दों-राज और नीति, से मिलकर, बना है। **'राजृ दीप्तौ'** धातु से बने 'राज' शब्द का अर्थ प्रकाशमान होता है तथा **'णीञ् प्रापणे'** धातु से बने 'नीति' शब्द का अर्थ प्राप्त करना या प्राप्त कराना होता है। इस प्रकार राजनीति शब्द का अर्थ हुआ। **व्यवस्था का आश्रय लेकर देश और दुनिया को अज्ञान, अन्याय व अभावों से निकालकर विद्या, न्याय और समृद्धि से प्रकाशित करना।** सीधे सरल शब्दों में कहे तो- **'तमसो स ज्योतिर्गमय'** की व्यावहारिक व्याख्या ही राजनीति है। हमारे नेता कहे जाने वाले लोगों के कपट-कुटिलता से भरे हुए आचरणों को देखकर राजनीति शब्द एक गाली बनकर रह गया है, लेकिन इतना होने पर भी जब कभी नेताजी सुभाष चन्द्र का नाम आता है तो हमें राजनीति और नेता शब्द की गरिमा का आभास होने लगता है।

भारतीय राजनीति के मूलभूत आदर्शों के दर्शन हमारे वेदों में बड़ी स्पष्टता से होते हैं। अथर्ववेद में आता है- **"ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र विरक्षति"** (11.5.4) अर्थात् ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा ही राजा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। ब्रह्म शब्द का सरल व सामान्य अर्थ होता है- बड़ा। सब बड़ों में सब प्रकार से बड़ा होने के कारण परमात्मा को परम् ब्रह्म कहते हैं। लोक व्यवहार की बात करें तो लोक में शरीर सबसे बड़ी उपलब्धि विद्या की मानी जाती है तथा शारीरिक दृष्टि से शरीर द्वारा भोजन को पचाने पर बनने वाली अन्तिम धातु वीर्य को स्वास्थ्य व शक्ति के लिए सर्वोत्तम माना गया है। राजा को योग्य है कि वह ईश्वर की भक्ति, परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास रखते हुए विद्या की प्राप्ति व उन्नति के लिए प्रयास करता कराता हुआ मर्यादित-संयमी जीवन बनाकर राष्ट्र की सर्वविधि रक्षा करे। तप का सीधा अर्थ परिश्रम है, राजा आलसी, प्रमादी व सुविधा भोगी न होकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति से राष्ट्रहित संवर्धन में लग रहे। हमारा सौभाग्य है कि भारत को एक ऐसा राजा, शासक मिला हुआ है, जो वेद के इस मूल्यवान आदेश के अनुसार प्रभु परायण भी है। व्यक्तिगत जीवन में संयमित जीवन का धनी होने के साथ ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति और प्रगति के लिए प्रयासरत है। तप की बात करें तो हमारे प्रधानमंत्री की कार्यक्षमता अद्वितीय है, प्रशंसनीय है।

वेदों में राजा-प्रजा के परस्पर सम्बन्धों और कर्तव्यों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है। ऋग्वेद में कहा है- "प्रजा राजा को न्याय से राज्य पालने में और राजा प्रजा को धर्मयुक्त व्यवहार में प्रतिष्ठित करे।" (7.15.7)। प्रजा के पालन के लिए दिशा निर्देश इस प्रकार है- 'जब तक धर्मात्मा विद्वानों को राज्य में अधिकार न हों, तब तक यथावत् (प्रजा का) पालन होना दुर्घट है' (7.3.10)। सम्भवतः हमारे लिए विश्वास करना कठिन हो, लेकिन सच यह है कि वेद में पर्यावरण चेतना के चिन्ह ही नहीं पर्यावरण शोधन की विस्तृत चर्चा है। वेद में आता है- '(राजा) नदी नालों पर पुल बनाकर आर-पार जाने योग्य करे और नदियों को अप्रशस्त जल से रहित करे।" (ऋ. 7.18.5)। समाज व शासन आज गंगा आदि नदियों की स्वच्छता का अभियान चला रहे हैं, अगर हम वेद विद्या से जुड़े रहते तो जल प्रदूषण की समस्या इतनी विकराल होती नहीं। जल-शोधन की विधि भी वेद में प्राप्त है- **'हे मनुष्यों! जितना जल नदी आदि में जाता है और जितना मेघ मण्डल से प्राप्त होता है उतना सब होम (हवन-यज्ञ) से शुद्ध करके सेवन करो, जिससे सर्वदा मंगल बढ़ाकर दुःख का अच्छे प्रकार नाश हो"** (7.50.4)

राजा के मंत्री, सभासद आदि के सम्बन्ध में भी वेद बड़ी महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। 'हे राजन् जो शत्रुओं के छलों से ठगे गए न हों, संग्रामों में उत्साह को प्राप्त, शूरता युक्त युद्ध करें, सब ओर से गुणों का ग्रहण कर दोषों को त्यागें, वे ही आपके मंत्री हो "(ऋ. 7.1.10) वेद का आदेश है- 'विद्या-अध्ययन के लिए जो सन्तानों को नहीं देते, राजा उनके लिए दण्ड देवे' (ऋ.7.19.1)। 'वही राजा निरन्तर बढ़ता है जो अपराधी मित्रों को भी दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ता' (ऋ. 7.22.2)। "सभाध्यक्ष आदि मनुष्यों को चाहिए कि परस्पर एक सम्मति से दुष्ट पुरुषों को उत्तम स्थानों से दूर करके, श्रेष्ठ पुरुषों का सत्कार करके धर्मपूर्वक व्यवहार से राज्य का प्रबन्ध करें (ऋ. 3.12.6)। इस प्रकार राजनीति और राज्य-व्यवस्था के विविध आदेश-उपदेश हमारी प्राचीन धरोहर के रूप में हमारे वेदादि धर्मग्रंथों में विस्तार से मिलते हैं। भारत को सच्चे अर्थों में भारत बनाना है तो अपनी प्राचीन राजनीति से जुड़ना होगा।

मो. 7597894991, 9079039088

माता संतान को पाप रहित कर पवित्र बनाती है

● डॉ. अशोक आर्य

माता का मुख्य कार्य अपनी संतान में उतम कर्मों का आघान कर उन्हें पाप से रहित करना ही होता है। अपनी संतान को सब दृष्टियों से उत्तम बनाकर माताएँ उन्हें पवित्र बनाने के कार्य में सदा लगी रहती हैं। लेकिन माता इस प्रकार का उच्च तथा पवित्र कार्य करने में तब ही योग्य हो सकती हैं जब इस प्रकार के पवित्र कार्य करने की उसमें योग्यता हो। यह योग्यता वेदज्ञान से पूर्णतया संपन्न होने से ही आती है। इसलिए प्रत्येक माता में वेदज्ञान की निपुणता आवश्यक है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद इस प्रकार उपदेश कर रहा है :-

ता माता विश्ववेदसासुर्याय प्रमहसा।
मही जजानादितिर्ऋतावरी।।

ऋग्वेद 7.25.3

इस मन्त्र के माध्यम से एक बात स्पष्ट होती है कि **प्राणोदानौ वै मित्रा वरुणौ।।** शतपथ ब्राह्मण 1.8.3.12, तथा 3.6.9.16

हम जानते हैं कि मित्र सर्वदा सर्वप्रेमी होता है। यह मित्र ही है जो सदा हमारे सुख दुःख में काम आता है, हमें सब प्रकार का प्रेम देने वाला होता है। यह मित्र ही हमारे लिए वरुण का कार्य भी करता है। यह वर्णीय वरुण ही हमारे पाप ताप के निवारण का कारण होता है। इस प्रकार का जो वरणीय तथा श्रेष्ठ मानव होता है, वह ही हमारा सच्चा मित्र हो सकता है। अन्य कोई नहीं। इसलिए ही इस मन्त्र के माध्यम से माता को सच्चा मित्र तथा वरणीय मानते हुए मन्त्र उपदेश कर रहा है कि माता ऋतावरी अर्थात् वेद ज्ञान को जानने वाली हो, सब प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान करने वाली हो। माता सदा सत्य भाषण करने वाली हो, सत्य का आचरण करने वाली हो।

माता के लिए यह भी आवश्यक है कि वह महती दीनता हीनता के भावों से रहित हो अर्थात् वह सदा अत्यधिक अदीनता की भावना से भरी हो तथा हीनता के भाव तो उसमें आ ही न सकें। माता सत्य रूप में स्वतंत्रता की भावना से भरपूर विचार रखने वाली होनी चाहिए। पराधीनता की भावना से माता कभी न तो स्वयं ही ग्रसित हो तथा न ही इस भावना से अपनी संतान को ग्रसित करे। स्वाधीनता की भावना भरने के लिए उसका स्वयं का भी स्वाधीन होना आवश्यक होता है।

प्रत्येक माता की सदा यह ही भावना रहती है कि उसकी संतान सदा इन सब विषयों को जानने वाली हो। इसके लिए माता को स्वतंत्रता की प्रेमी होना ही होता है। इस प्रकार की माता किस प्रकार के पुत्रों को जन्म देने वाली होती है? जो इन सब

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

जीवन का उद्देश्य

● भद्रसेन

पृष्ठभूमि–इस संसार में हमारा जीवन जन्म से आरम्भ होता है। जन्म शब्द का अर्थ है–पैदा होना। दूसरी पैदा होने वाली चीज़ों में जैसे कई वस्तुओं का मेल होता है ऐसे ही हमारा जन्म आत्मा–मन और इन्द्रियों का संयोग है। शरीर शब्द सारे धड़ के लिए आता है, जिस में ऊपर से लेकर नीचे तक आँख आदि इन्द्रियाँ हैं। यहाँ साँस लेने–छोड़ने और देह धारण का कार्य प्राण करते हैं। जैसे हम आँख से बाहर के दृश्यों को देखते हैं। वैसे ही हमारे अन्दर भी सोचने, निर्णय करने, पिछली यादें याद करने तथा मैं–मेरेपन की भावना प्रकट करने की बात होती है। जिनके द्वारा ये कार्य होते हैं, उनको अन्त:करण (=अन्दर की इन्द्रियाँ, साधन) कहते हैं। ये मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के नाम से चार हैं।

इन्द्रिय–अन्त:करण–प्राण जिसकी चेतना, प्रेरणा से अपना–अपना कार्य करते हैं वही आत्मा है, जोकि अजर–अमर–चेतन सत्ता है। यही शरीर आदि का अधिष्ठाता और संचालक है। जीवित अवस्था में हम जो भी व्यवहार करते हैं वह आत्म–अन्त:करण–इन्द्रियों के मेल से ही होते हैं। इस मेल के बिना अकेला आत्मा कोई व्यवहार नहीं कर सकता।

मरण शब्द जन्म के विपरीत भाव को रखता है। अत: मेल, बनावट, उत्पन्न का आँखों से ओझल हो जाना ही मौत, मृत्यु है। जैसे मकान बहुत सारी चीजों का मेल है। समय के साथ एक दिन उस का ताल–मेल ढीला पड़ जाता है। कई बार समय से पहले भी किसी प्रकार की टक्कर भूचाल, आग, बनावट की गड़बड़ के कारण वह ताल मेल बिखर जाता है। तब वह ध्वस्त वस्तु अपने से होने वाले कार्य को नहीं करती।

इस अवसर पर तात्कालिक परिस्थितियों से परिचित कराने के लिए–पंछी उड़ गया, प्राण निकल गए, खेल खत्म हो गया, शरीर ठण्डा पड़ गया, वियोग, बिछोह जैसे शब्द प्राय: बोले जाते हैं जिनसे मौत के विविध पहलुओं की पहचान सामने आती है। जैसे कि व्यक्तिगत स्तर पर एक सूक्ष्म आत्मा अपने पूर्व प्राप्त शरीर, इन्द्रिय, मल आदि से जहाँ अलग हो जाती है, वहाँ स्पष्ट रूप से देहधारी सामाजिक स्तर पर परिवा र–रिश्तेदारों–मित्रों–पड़ोसियों तथा विविध क्षेत्र के कारोबारियों से बिछुड़ता है। तभी तो कहा गया है–

'अपने घर को छोड़ चला यह, नाते–रिश्ते तोड़ चला यह।

सबसे मुख मोड़ चला यह,–––––––।

इन सभी तरह की भावनाओं को ध्यान में रख कर वेद ने कहा है–

अश्वत्थे वो निषदनम्, पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ, यत्सनवथ पूरुषम्।। यजु. 12,79

शब्दार्थ–अश्वत्थे=न+श्व+स्थ अर्थात् जिसका भरोसा नहीं है कि कल रहेगा या नहीं ऐसे संसार में **व:**=तुम सब का **निषदनम्**=बैठना, रहना है। **पर्णे**=पत्ते जैसे परिवर्तनशील **देह** में **व:** = तुम्हारा **वसति:** = बसेरा **कृता** = किया गया है, बना हुआ है। अत: **गोभाज**:=गो=विविध ज्ञानों की गति, प्राप्ति, अनुभव कराने वाली **इन्द्रियों** और इन इन्द्रियों के आश्रयस्थल **शरीर** और देह के कारण, आधार **पाँच भूतों** तथा गतिशील **सूर्य**–चन्द्र, बुद्धि आदि का **भाज**:=सेवन करने वाले अर्थात् ऐसे अनोखे मानव देह वाले **इत् किल** = ही, निश्चित रूप से **असथ** = (इस इस का सदुपयोग करने वाले) होवो, बनो। **यत्** = कि जिस से **पूरुषम्** = पूर्णता को **सनवथ** = प्राप्त करो, प्राप्त कर सको। इस मन्त्र पर विस्तृत विचार **'अजीब पहेली, जन्म–मरण की उलझन'** में है।

भावार्थ–तुम्हारा बसेरा चलायमान संसार में है और पत्ते की तरह पतनशील देह में तुम्हारा वास है। अत: इन इन्द्रियों, पृथिवी–सूर्य और बुद्धि आदि का उचित उपयोग करते हुए अपने आप को पूर्ण बनाने का प्रयास करो।

व्याख्या– मन्त्र का प्रथम चरण है– **अश्वत्थे वो निषदनम्**–जिसका अभिप्राय है, कि दुनिया की जितनी भी भौतिक चीज़ें हैं, जिन को प्रतिक्षण हम अपने व्यवहार में वर्तते हैं, वे सारी की सारी (आहार, वस्त्र, बर्तन, भवन, फर्नीचर आदि सभी वस्तुएँ) परिवर्तनशील, चलायमान, नाशवान हैं। उनमें अपने–अपने नियम के अनुरूप सदा परिवर्तन आता रहता है, और फिर एक दिन वे आँखों से ओझल हो जाती हैं। हाँ, दुनियाँ वालो! अपनी सुख–सुविधाओं के लिए इन चीज़ों को खुशी–खुशी इकट्ठा करो, पर ध्यान रखना, ये साथ जाने वाली नहीं हैं।

पर्णे वो वसति :– केवल हमारे द्वारा वर्ते जाने वाले भौतिक पदार्थ ही अस्थिर, अनित्य नहीं हैं। अपितु हमारा शरीर भी नाशवान, जीर्ण–शीर्ण होने वाला है। पता नहीं कब, कि धर से आँधी का कैसा झोंका आए और यह (शरीर) डण्ठल से अलग हुए पत्ते की तरह नीचे पड़ा दिखाई दे। अत: पतनशील शरीर में तुम्हारा वास है। आए दिन मौत की जो भी घटनायें सामने आ रही हैं उनसे भी यही सिद्ध हो रहा है, कि इस शरीर का कोई भरोसा नहीं, यह कब जवाब दे जाए? क्योंकि शरीर जीर्ण–शीर्ण होने वाला है।

स्वर्ण अवसर– इस प्रसंग में यह बात विशेष सोचने वाली है, कि क्या इस कर्मभूमि पर मानव चोले जैसे सुन्दर रूप को प्राप्त करके हम इसका कुछ विशेष लाभ उठाने का प्रयास करते हैं? या केवल स्वार्थ साधने या किसी प्रकार के अभिमान के नशे में ही चूर रहते हैं।

जीवन उद्देश्य– हाँ, आईये! अब मन्त्र के चौथे चरण की भी कुछ चर्चा कर लें। वह है–**यत्सनवथ पूरुषम्** जिसका भाव है कि अपने आपको पूर्ण बनाना। जीवन को नाटक या खेल जैसा समझ कर उसमें हर प्रकार की कुशलता और सफलता प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। जैसे किसी खेल में जब एक खिलाड़ी को खेलने का अवसर प्राप्त होता है तो वह वहाँ अपनी निपुणता, योग्यता प्रस्तुत करता है। ऐसा करने से जहाँ उसको सफलता, प्रशंसा, प्रोत्साहन प्राप्त होता है, वहाँ भविष्य में भी उसका अच्छा अवसर सुरक्षित हो जाता है। और यही वहाँ की पूर्णता कही जा सकती है। ठीक इसी प्रकार मानव जीवन के माध्यम से हमें एक ऐसा स्वर्ण अवसर प्राप्त होता है, कि इसमें जहाँ हम सामजिक जीवन को पूर्ण, विकसित बनाने में समर्थ हो सकते हैं, वहाँ अपने इस जन्म के शुभकर्मों से भावी जन्म को भी अच्छे रूप में सुरक्षित, सुनिश्चित कर सकते हैं।

भारतीय साहित्य, संस्कृति में मानव जीवन की पूर्णता मोक्ष में मानी गई है। धर्माचरण ही मोक्ष प्राप्ति का परम साधन है और ईश भक्ति–उपासना इसी के अन्तर्गत आते हैं। साधना स्वस्थ शरीर, निर्मल मन से सिद्ध होती है। अत: जीवन के पूर्ण विकास–निखार के लिए अपने आपे के सभी तत्त्वों का सन्तुलित आहार के सदृश सन्तुलन रखना आवश्यक है। सेवा पूर्णता प्राप्ति का सरल साधन है। प्रत्येक यथारुचि, यथाशक्ति इस को अपना सकता है। किसी की ज़रूरत पूरी करना भी सेवा ही है। अत: सेवा का क्षेत्र बहुत विशाल है।

यूं फूल तो गुलशन में खिलते हैं हजारों ही।
हो जिस में भरी खुशबू जीवन तो उसी का है।।

शालीमार नगर
होशियारपुर (पंजाब)

☞ पृष्ठ 04 का शेष

माता संतान को पाप रहित ...

विषयों को जानने वाले महाविद्वान होने के कारण हमारे मित्र तथा वरुण बन सकें। मित्र होने के कारण हमें सदा सुपथ पर ही ले जाने वाले हों तथा वरुण होने के कारण हमारे लिए वह ही उपदेश दें, जो हमारे लिए वरणीय हो। वह सर्वप्रेमी वर्णीय श्रेष्ठ मनुष्य को अपने प्रकृष्ट तेज, (वह तेज जो वेदाध्ययन से माता ने पाया था, उस तेज) से जो ज्ञान रूपी प्राण हमें देती है, उस प्राण दान के लिए उत्पन्न करती है।

निघंटु के 3.10 में ऋत शब्द का अर्थ **'ऋतमिति सत्यनाम'** किया है। इसके अतिरिक्त सत्यविद्या प्रतिपादक, सत्य विद्या का प्रतिपादन करने वाला अर्थात् वेद, यज्ञ, धन आदि भी इस के अर्थ स्वरूप दिए हैं। इस प्रकार यह तथ्य सामने आता है कि सत्यनाम वाली, वेद ज्ञान से युक्त सदा सब प्रकार के यज्ञों को करने वाली तथा धन धान्य आदि से संपन्न उदारता से भरपूर माता ही अदिति नाम की अधिकारी होती है। इस प्रकार की अदिति नामी माता ही ऊपर बताये अनुसार अदीना तथा सत्यनिष्ठा माता वेद के ज्ञान से संपन्न समग्र विश्व की प्रेमी होने से सब प्रकार के तापों का निवारण करने वाली तथा सदा वरण करने के योग्य होती है। इन गुणों से युक्त माता ही अपने प्रकृष्ट तेज से श्रेष्ठ पुरुषों को उत्पन्न कर सकती है। इसलिए माता के लिए यह आवश्यक है कि वह उत्तम व तेजस्वी संतान की उत्पति के लिए न केवल वेद के उत्कृष्ट ज्ञान से संपन्न ही हो अपितु वेद ज्ञान के अनुरूप आचरण करने वाली भी हो।

इस प्रकार माता के लिए वेद ने बहुत ही ऊँचे आदर्शों को स्थापित किया है। जिस प्रकार मही अर्थात् भूमि सदा निर्माण का कार्य करती ही रहती है, इस निर्माण कार्य को वह कभी बाधित नहीं होने देती, इस प्रकार ही माता भी सदा निर्बाध रूप से अपनी संतानों का निर्माण करती रहे। माता के लिए निघंटु ने अदिति तथा ऋतावरी आदि शब्दों का भी प्रयोग किया है। इन शब्दों के गुणों से युक्त श्रेष्ठ व विदुषी माता अपनी संतानों के दोषों को सदा दूर करने का कार्य करते हुए उन्हें प्रशस्त बना सकती है, उन्हें उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ा सकती है। इसलिए माता के लिए आवश्यक हो जाता है कि अपनी संतानों को प्रशस्त बनाने के लिए वह वेदानुसार अदिति, ऋतावरी मही आदि अर्थों के अनुरूप स्वयं को बनाने के लिए निरंतर वेद ज्ञान को पाने का यत्न करते हुए इस ज्ञान की अद्वितीय धारक बन जावे। इस प्रकार की माता ही वास्तव में उतम संतानों की निर्माता हो सकती हैं।

104 शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी–201010
गाजियाबाद
मो. 09717527067

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवादी पत्रकारिता के सम्मानित सिरमौर : ज्ञानचन्द जैन

● हरिकृष्ण निगम

क्या हम आज कल्पना भी कर सकते हैं कि इस देश में स्वतन्त्रता–प्राप्ति के बाद एक ऐसे भी वयोवृद्ध, कर्मठ एवं राष्ट्रवादी समर्पित पत्रकार हुए थे जो अपनी वायु के 86 वर्ष पार करने के बाद भी अनवरत हिन्दी पत्रकारिता व साहित्य के लिए अपने जीवन को न्योछावर करने के लिए कटिबद्ध थे। वे थे श्री ज्ञानचन्द पैन जिनका जन्म 8 फरवरी सन् 1918 में हुआ था और देहावसान 18 जुलाई 2006 में। इन्होंने अपने जीवन की अर्धशती से अधिक समय लेखन को समर्पित कर दिया। श्री जैन ने अपने जीवन के बहुमूल्य अनुभवों को समेटे हुए एक महत्वपूर्ण व चर्चितकृति **"पत्रकारिता के पास वर्ष (1938–88)"** अपने युग के विश्वस्त प्रखर साक्षी के रूप में प्रकाशित की थी जिसने प्रकाश में आते ही साहित्य व पत्रकारिता जगत् में विमर्श की दिशा को उद्वेलित कर दिया था। वे आज विस्मृत किए गये ज्ञानचंद जैन ही थे।

यह एक विस्मय का विषय है कि नेहरू जी व कांग्रेस के प्रख्यात प्रकाशन गृह *एसोसिएटेड जर्नल्स* जहाँ से **'नेशनल हेराल्ड'** छपता था उसी के हिन्दी दैनिक **'नवजीवन'** से जुड़े रहने पर भी वे नेहरू जी के सेकुलरवाद की अवधारणा व हिन्दू आस्था के प्रति प्रच्छन्न वितृष्णा से कभी आतंकित नहीं हुए थे। ज्ञानचन्द जी स्वयं हिन्दू व जैन आस्था के सुविज्ञ व्याख्याता ही थे बल्कि नहीं उनके ऐतिहासिक व पुरातात्विक अतीत के घोर प्रशंसक थे। उनके समग्र लेखन की विषयवस्तु एक प्रखर मौलिक चिन्तक जैसी थी जो कांग्रेसी रूझानों से सर्वथा अलग थी।

आज जब हम देश के राजनीतिक व बौद्धिक परिदृश्य का बारीकी से अध्ययन करते है तब श्री जैन के अन्तिम वर्षों के विश्लेषण को अत्यन्त प्रासंगिक व समीचीन पाते हैं। ऐसा नहीं है कि वे अपने जीवन काल में देश में भलीभांति समझे नहीं गए पर आज उन्हें पुनः याद करने की आवश्यकता है। सन् 2004 में उन्हें उत्तरप्रदेश प्रैस ब्लाक, लखनऊ द्वारा **"पत्रकार शिरोमणि"** की प्रतिष्ठा से सम्मानित किया गया था और अगले वर्ष ही 17 अप्रैल 2005 को उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा उन्हें **"पत्रकारिता भूषण"** के सम्मान से अलंकृत किया गया। श्री ज्ञानचन्द जैन की मृत्यु के मात्र कुछ माह पहले जब वे स्वस्थ थे तब भी उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें **"यश भारती"** की पदवी से सम्मानित किया था।

सन् 1947 के तुरन्त बाद ज्ञानचन्द जी लखनऊ के ही वरिष्ठ लेखक व इतिहासकार डॉ. शशिकान्त के पिता देश भर में प्रसिद्ध शिक्षाविद्–इतिहास–मनीषी व पुरातत्वविद् डॉ. ज्योति प्रसाद जैन के संरक्षण व प्रेरणा का लाभ एक संयोग के तहत उठाने लगे थे। यह यह कहना भी प्रासंगिक होगा कि डॉ. शशिकान्त आज भी द्विभाषी पत्रिकाओं **"अंतर्जन–फ्राठन" और शोधादर्श"** का नियमित रूप से प्रकाशन कर रहे हैं जो देश के विद्वत्वर्ग में शोध व तथ्यपरक अनुशासन द्वारा अभिलिखित करने के लिए उच्चस्तरीय प्रकाशन माने जाते हैं।

डॉ. शशिकांत के अनुसार उन दिनों लखनऊ के केसरबाग सर्कस या बारादरी में जैन परिवार की एक प्रसिद्ध औषधियों का स्टोर था और ज्ञानचन्द जी का **'नवजीवन'** कार्यालय भी निकट ही स्थित था। अपने सम्पादकीय कार्य व दायित्व से निपटकर बहुधा वे उसी मेडिकल स्टोर में तात्कालिक राजनीतिक विमर्श व साहित्य चर्चा के लिए डॉ. ज्योतिप्रसाद जी के पास बैठते थे। उनके उत्साहित करने पर शशिकान्त जी ने स्वयं **'नवजीवन'** में 1952 से ही सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विषयों पर लिखना प्रारंभ किया था। ज्ञानचन्द जी ने एक 4–द्विवसीय सेमिनार भी 26–29 अक्टूबर 1975 में भारतीय संस्कृति पर आयोजित किया था। बाद में लखनऊ के आल इण्डिया रेडियो से 13 अप्रैल 1995 को इसी विषय पर परिचर्चाए भी प्रसारित की गई थी।

ज्ञानचन्द जी के जीवन का वह क्षण आज भी अनेक स्थानीय नागरिकों द्वारा याद किया जाता है जब अनन्त ज्योति विद्यापीठ द्वारा **"रवीन्द्रालय"** में उनके हिन्दी पत्रकारिता में विशिष्ट योगदान के लिए 10 मई 1907 के दिन आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में उन्हें सम्मानित किया गया था। 80 वर्ष के हो जाने के बावजूद भी उन्हें लगातार अपनी यादों में संजोए थे। पर सन् 1988 के बाद उनके अस्वस्थ रहने पर भी उनकी साहित्य–यात्रा चलती रही थी। उन्होंने 7 प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे थे जिनमें से 5 तब प्रकाशित हुए थे जब उनका 18 जुलाई 2006 को देहावसान आसन्न था।

ज्ञानचन्द जी की पहली कहानी 1935 में प्रसिद्ध हिन्दी पत्रिका 'हंस' में प्रकाशित हुई जब वे बी.ए. के छात्र थे। उन्होंने सबसे पहले इलाहाबाद से प्रकाशित राष्ट्रीय "दैनिक भारत" से 1938 में एक श्रमजीवी पत्रकार के रूप में प्रवेश किया, फिर नवम्बर 1947 में लखनऊ आकर **'नवजीवन'** के सम्पादकीय विभाग को चुना था। **"नेशनल हेराल्ड" में उमाशंकर दीक्षित के समय में पहली बार विवादों की छाया पड़ी थी और जब कर्मचारियों पर दबाव पड़ना शुरू हुआ तब फरवरी 1976 में ज्ञानचन्द जी ने त्यागपत्र देकर गढ़वाल विश्वविद्यालय** के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष के रूप में 1976–77 में कार्य किया। 1977 से 1980 तक वे लखनऊ के ही **"स्वतंत्र भारत"** में नियमित रूप से अग्रलेख लिखते रहे। इस प्रकार 1938 से 1988 तक पचास वर्षों तक वे कार्यरत रहकर हिन्दी पत्रकारिता की स्वातंत्र्योतर यात्रा के सहयात्री बन गए थे।

श्री ज्ञानचन्द जी की कुछ पैनी व चुभती टिप्पणियों इतनी प्रासंगिक हैं कि उनको उद्धृत करने का लोभ संवरण कसा मुश्किल है। वे कहते थे कि आज स्वतंत्र विचार प्रकाशन के साधन अत्यन्त सीमित हो गए है और यदि हम **"21वीं शताब्दी में सन् 2020 तक भारत को एक विकसित देश बना देने का सपना साकार करना चाहते हैं तो भारतीयत्व और युक्तियुक्त चिन्तन के प्रखर संवाहक के रूप में ऐसे प्रकाशनों को बढ़ावा दें जो सही सोच का दिशा–संकेत दे सकें।"**

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और युक्तियुक्त चिंतन के प्रखर संवाहक श्री ज्ञानचन्द को आज फिर याद करने का समय है जिनके जीवन में अध्ययन, मनन, लेखन व पत्रकारिता यावज्जीवन धमनियों में रक्त की तरह बहती रही थी।

ए–1002 पंचशील हाईट्स, महावीर नगर
कान्दिवली (पं.) मुम्बई–400067
मो. 9820215464

मन

● अशोक जौहरी

मन आत्मा का साधन है। आत्मा का मन से, मन का इन्द्रियों से और इन्द्रियों का बाह्य जगत् से सम्पर्क होने से उसमें ज्ञान तथा इच्छाऐं क्रियान्वित होती हैं। ज्ञान आत्मा का विषय है मन का नहीं।

यस्मान्न ऋते किञ्न कर्म क्रियते (यजु. वेद) अर्थात् मन के बिना कोई कार्य सम्भव नहीं।

यही कारण है कि इससे सम्पर्क न होने पर हम देखते हुए भी नहीं देखते। सुनते हुए भी नहीं सुनतें। बालक का मन पाठ में न होकर प्रिय गाना सुनने में है और गाने के सुनने के साथ–साथ पढ़ाई करेगा तो उसे पाठ कंठस्थ न होगा।

मन जड़ वस्तु है, इसका प्रभाव हमारे भोजन व संस्कारों पर भी पड़ता है। **"जैसा तन वैसा मन"** यह कहावत हमारे जीवन में चरितार्थ होती है। जैसा भोजन हम करेंगे वैसा ही हमारा मन होगा। निरामिश भोजन करने से सात्विक और मांसाहार व मसालेदार भोजन करने पर हमारे मन में तामसिक प्रवृत्ति उत्पन्न होगी। अर्थात् तामसिक भोजन ग्रहण करने से प्रमाद, भोग, विलास, हिंसक व दुष्ट व्यक्ति बनने लगेंगे।

मन संस्कारों का कोष है। इस पर संस्कारों व कुसंस्कारों का प्रभाव पड़ता है। अतः बालकों को बाल्यकाल से ही माता–पिता, गुरु से अच्छी शिक्षा लेनी चाहिए। अभिभावकों को भी बालकों में शुरु से ही सुसंस्कार डालने चाहिएँ, जिससे उसके मन में अच्छा प्रभाव पड़े तथा बड़ा होकर वह सहृदय, शान्तचित्त, दानवीर व मन्यु बनें और संसार में आदर के पात्र बनें। इसके विपरीत बुरी संगत से वह कुसंस्कारी बनकर दुराचार करेंगे, जिससे समाज उसे प्रताड़ित करेगा, निन्दनीय हो जावेंगे।

महर्षि मनु के अनुसार

यथा यथा मनस्तस्य दुष्कृतकर्मगर्हिति।
यथा यथा शरीरतत्तेन् धर्मेण मच्छते।।

यदि कुसंगति से मनुष्यों में दुर्गुण आ जावें तो उसको दृढ़ संकल्पों द्वारा इन विकारों को त्यागने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए और उसकी पुनःवृत्ति कदापि न करना चाहिए। मन से प्रायश्चित करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं और मनुष्यों को एक अवसर सुधरने का अवश्य देते हैं। ईश्वर न्यायप्रिय व दयालु होने के कारण ही ऐसा करते हैं। उनका उद्देश्य मनुष्यों को सुधारने का होता है। ईश्वर द्वारा दण्ड दिये जाने के पीछे भी यही कारण है।

वेद में मन को **हृत्प्रष्ठिम्** कहा है। अर्थात् मन हृदय में स्थित होता है। क्योंकि मन जड़ है यह आत्मा से पृथक् रहकर कोई कार्य नहीं कर सकता। सात्विक प्रवृत्ति के मनुष्य में यह आत्मा के साथ रहता है। इसलिए इसका शरीर के साथ नाश नहीं होता, नवीन शरीर मिलने पर यह आत्मा के साथ प्रवेश करता है। हमारे संस्कार नए शरीर–चित्त में स्थित रहते हैं। इसलिए मन को अमृत कहा गया है। जिसका नाश नहीं होता। यह सिलसिला जन्म–जन्मान्तर तक चलता रहता है। मोक्ष मिलने पर शरीर को नया मन मिलता है। नया मन मिलने पर उसकी सारी स्मृति चित्त से विलुप्त हो जाती है। मनुष्य को उसको प्राप्त करने के लिए दुबारा प्रयास करना पड़ता है।

इन्दापुरम्, गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)

ईश्वर पर विश्वास

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

प्लेसनटन यू.एस.ए. आने से पूर्व, परिवार के अतिरिक्त जिन महानुभावों की शुभकामनाएं व आशीर्वाद लिया था उनमें स्वनामधन्य श्री धर्मवीर बत्तरा, प्रधान; आर्यसमाज सैक्टर पंचकुला, हरियाणा भी थे। केन्द्रीय आर्यसभा, चण्डीगढ़, मोहाली और पंचकुला की अत्यन्त समृद्धिशाली, अनेक प्रकल्पों का सफलतापूर्वक संचालन करने वाली यह प्राणवान आर्यसमाज है। यह आर्यसमाज प्रतिवर्ष नवम्बर मास में, वार्षिकोत्सव पर अत्यत्तुम स्मारिका निकालती है। आदरणीय बत्तरा जी के चलते गत तीन वर्षों से मेरे लेख इस स्मारिका का अंग बन चुके हैं। बत्तरा जी ने स्मारिका परिवार का अंग मानकर मुझे सम्मानित किया है। जैसे ही मैंने बताया कि मैं एक दिसम्बर 2017 को भारत लौटूंगा तो बत्तरा जी ने कहा– स्मारिका के लिये लेख का क्या होगा। मैंने कहा– मिल जावेगा। तत्काल वाट्स एप पर मेल आईडी का आदान–प्रदान हो गया। इतनी भूमिका इसलिये आवश्यक समझी कि ऐसे ही स्नेहासिक्त महानुभाव, लेखक को जीवनदायिनी शक्ति देते हैं। अस्तु!

2016 की स्मारिका में **'दो मंत्र युवाओं के लिये'** प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् 5–7 पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। अब यह 'ऋषि–समर्पण' में संकलित है। इसी क्रम में यह लेख है। युवाओं के लिये यह लेख है। भटकन के शिकार–तिरुपति बालाजी, वैष्णो देवी, सोमनाथ, वैद्यनाथ धाम के चक्कर लगाने के पश्चात् भी अतृप्त, असंतुष्ट, बेचैन जन, ख्वाजा मुईन उद्दीन चिस्ती–अजमेर तक पहुंच जाते हैं। ऐसे लोग भी इस लेख से लाभान्वित होना चाहें तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है?

'दो मंत्र युवाओं के लिये' लेख का सारसंक्षेप यही है कि दुर्गुण, दुर्व्यसन से छूटने की प्रार्थना इस प्रभु से कीजिए जो भू:, भुव: और स्व: है; वही वरण करने योग्य है। सच्चा मित्र है। मुझे नहीं मालूम कि मेरा लेख कितने युवक/युवतियों को स्पर्श कर सका। अभी भी असंख्य ऐसे हैं जो उसी मौज–मस्ती में आकण्ठ डूबे हुए हैं। उन्हें सतत जगाने की आवश्यकता है इसीलिये दिनांक 23/8/17 को फेसबुक पर एक पोस्ट डाली थी चूंकि वह संदर्भ में उपयुक्त है इसलिये उसे अविफल दे रहा हूँ। नकारात्मक भाषा–शैली में व्यंग्य के रूप में लिखी होने पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी, इसी आशय से यह लिखी गई थी। पोस्ट इस प्रकार है–

23 अगस्त 22'43 आधुनिकी चरसी, ठरकी, सामिषी युवक–युवतियां जो पूरी–पूरी रात आमोद–प्रमोद में बिताकर अल–सुबह घर लौटती हैं, उनसे गुज़ारिश है कि वे दयानन्द का नाम न लें, न सुनें। आर्यसमाज में झांके भी नहीं क्योंकि उन्हें 'कम्पनी' नहीं मिलेगी। सुबह नहा–धोकर आर्य समाज जाना पड़ेगा। हवन सामग्री, अगरबत्ती की अपरिचित, अप्रिय गंध नासापुरों में जाकर मिजाज़ बिगाड़ देगी। ब्रह्मचर्य पालन, रक्षण पर, सद्विचारों पर रूखे सूखे, घिसियापिटी भाषण सुनने पड़ेंगे। हो गया न कबाड़ा। आपके दो दिवगंत साथियों की बात बताता हूँ।

नानकचन्द कोतवाल, बरेली का बेटा मुंशीराम दयानन्द के चक्कर में पड़ गया। सब कुछ बरबाद हो गया। दारु छूट गई। मांसाहार छूट गया। दोस्तों के साथ शाम गुज़ारना भी छूट गया। संन्यासी बन गया। दिल्ली में बीमार पड़ा था, अब्दुल रशीद ने तीन गोली में ढ़ेर कर दिया।

दूसरा मेहता अमीचन्द तहसीलदार था। सामिष भोजन, दारु का शौकीन, रातें कोठे पर गुज़ारने वाले को दयानन्द की सभा में जाकर गाना गाने की क्या ज़रूरत पड़ी थी? मीठा गला था, मीठा भजन था। ऋषि ने गाने की अनुमति दे दी। अच्छा लगा तो कह दिया रोज भजन गाया करो। दुश्मनों ने चुगली कर दी। जब वह आया, ऋषि ने कह दिया– 'अमीचन्द हो तो हीरा, पर कीचड़ में पड़े हो'। शराबी, कवाबी आर्यसमपाज का भजनोपदेशक हो गया। इनसे कुछ नसीहत लो भाई।'

मस्तिष्क की हार्ड डिस्क पर स्थायी रूप से प्रभाव डालने वाली यह पोस्ट है। यदि इसकी भावना के अनुकूल जीवन–व्यतीत करने का सुन्दर अवसर खो दिया तो, जीवन के संध्याकाल में, केवल पश्चाताप ही हाथ आवेगा। भगवान् दयानन्द का संसर्ग कीजिए उनके ग्रंथों का, विशेषकर सत्यार्थ–प्रकाश के प्रथम और सप्तम समुल्लास (अध्याय) का अथवा आर्यसमाज जाइए। दुर्गुण–दुव्यर्सनों से निस्तार का कार्य खुल जावेगा। यह जीवन भी सुख–शांति से व्यतीत होगा और आगामी जीवन के लिए पाप–कर्मों का बोझ कुछ कम होगा। आर्यसमाज जाकर ढ़ाई–तीन घन्टे व्यतीत करना न चाहें, तो दोनों समय संध्योपासना कीजिए, स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का अर्थ सहित जाप कीजिए। यदि इतना भी समय न दे सकें तो केवल परमात्मा के निज नाम **ओ३म्** का अर्थ सहित स्मरण कीजिए। उसका भी उतना ही प्रभाव होगा जितना समस्त संध्यापोसना, स्तुति–प्रार्थना और उपासना मंत्रों का, यज्ञ का। ओ३म् की जितनी व्याख्याएं मिलें संग्रह कर लीजिए। कायापलट के लिये इतना काम ही पर्याप्त है। ईश्वर से आपको सम्मति देने की प्रार्थना करता हूँ। सलंग्न ओ३म् भजन फिलहाल आपके लिये पर्याप्त रहेगा।

ओ३म् है जीवन हमारा,
ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता, विद्याता,
ओ३म् पालन हार है।।
ओ३म् है दु:ख का विनाशक,
ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल, तेज धारी, ओ३म्
करुणाकन्द है।।
ओ३म् सबका पूज्य है,
हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से,
हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओ३म् के गुरुमंत्र जपने से
रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी,
धर्म में होगी लगन
ओ३म् के जप से, हमारा
ज्ञान बढ़ता जाएगा।
एक दिन यह ओ३म् हमको
मुक्ति तक पहुंचाएगा।

22 नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर– 474001
म.प्र.

☞ पृष्ठ 02 का शेष

बोध कथाएँ...

आ गई। अब सब लोग घबराये कि नदी को कैसे पार करें? कोई पुल नहीं, नाव नहीं। पार जाना आवश्यक है, कैसे जायें?

इनमें एक स्याना था। उसने कहा–"देखो, घबराओ नहीं, नदी को अवश्य पार करना है। सब लोग एक–दूसरे का हाथ पकड़ लो। हम सब मिलकर पार हो जायेंगे।"

सबने ऐसा ही किया। दृढ़ता से हाथ पकड़ लिए। प्रयत्न करके पार हो गए। किनारे पर पहुँचे तो स्याने व्यक्ति ने कहा–"अब गिनती कर लो कि कहीं कोई नदी में तो नहीं रह गया?"

दूसरे ने कहा–"सबसे अधिक बुद्धिमान् तू ही है, तू ही गिन।"

उसने गिनना आरम्भ किया–"एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह।" स्वयं को उसने गिना ही नहीं। चौंककर बोला–"ये तो ग्यारह हैं, एक व्यक्ति कहाँ गया?"

दूसरे ने कहा– "ठहरो मैं निगता हूँ।" उसने भी अपने–आपको छोड़ दिया। कहा–"ये तो ग्यारह हैं।" तब तीसरे ने गिना। उसने भी अपने–आपको नहीं, शेष ग्यारह को ही गिना। चौथे ने गिना, पाँचवें ने गिना। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों ने गिना। किसी ने भी अपने–आपको नहीं गिना। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों ने गिना। किसी ने भी अपने–आपको नहीं गिना। सबने ग्यारह ही गिने और लगे रोने कि एक व्यक्ति डूब गया। वे इस प्रकार रो रहे थे कि एक और यात्री उधर से निकला–उसने पूछा–"क्या हुआ है भाई! तुम रोते क्यों हो?"

उन्होंने कहा–"हम बारह थे। नदी को पार करते हुए एक व्यक्ति डूब गया। अब ग्यारह शेष रह गये हैं, इसलिए रोते हैं।"

उस व्यक्ति ने एक दृष्टि में उन्हें देखा कि ये तो बारह हैं। तब बोला–"देखो! यदि मैं तुम्हारे बारहवें साथी को खोज दूँ, तो?"

वे बोले–"तब तो हम तुम्हें भगवान् मान लेंगे।"

उसने कहा–"बहुत अच्छा। सब बैठ जाओ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर चपत मारूँगा। जिसे पहली चपत लगे, वह कहे एक, जिसे दूसरी लगे, वह कहे 'एक'। पहले ने कहा "हाँ एक। तब दूसरे के मुँह पर चपत मार कर कहाँ दो। इस प्रकार सब बोलते जाओ।"

वे सब बैठ गये। उस यात्री ने पहले व्यक्ति के मुख पर चपत मारकर कहा–"दो।" दूसरे ने कहा–"हाँ, दो।" इसी प्रकार उसने तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह–सब गिन डाले। अन्तिम यात्री ने कहा–"हाँ, बारह।" और सब प्रसन्न हो गये कि उनका बारहवाँ साथी मिल गया। सबने चपत मारनेवाले को कहा–"तू तो वस्तुतः भगवान् है।"

आपको इन यात्रियों की मूर्खता पर हँसी आती है, परन्तु सोचकर देखो, हम स्वयं क्या कर रहे हैं? हम बारह यात्री चले थे जीवन की इस यात्रा पर – पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बारहवाँ आत्मा। हमने आत्मा को भुला दिया। ग्यारह–ही–ग्यारह दिखाई देते हैं। बारहवाँ दृष्टिगोचर नहीं होता। इन ग्यारह के लिए हम सब–कुछ करते हैं। प्रातः से सायं तक, सायं से प्रातःकाल तक परिश्रम करते हैं। आत्मा के लिए कुछ भी नहीं करते। इन ग्यारह को हम प्रत्येक प्रकार का भोजन देते हैं। आत्मा को हमने भूखा बैठा रक्खा है। आज आत्मा ही डूब गया है। अतः मनुष्य दुःखी है, अशान्त है, कहीं भी उसे शान्ति नहीं मिलती।

क्रमशः

महात्मा आनन्द स्वामी

● शिवनारायण उपाध्याय

महात्मा आनन्द स्वामी आर्य समाज के प्रचारकों में विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने बीसियों वर्षों तक देश में घूम कर अपने सरल हृदयग्राही उपदेशों से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भाग लिया है। उनके उपदेशों को श्रवण करने के लिए जनता घण्टों तक शान्ति पूर्वक बैठकर प्रतीक्षा करती रहती थी। उपदेश सरल भाषा में होते थे और बीच-बीच में उनमें कई कथाएं सम्मिलित होकर उन्हें रोचक बना देती थी। उपदेश के मध्य वे योग द्वारा प्राप्त सिद्धियों का प्रदर्शन भी करते रहते थे। इससे श्रोता लोग मंत्र मुग्ध होकर उनके चेहरे पर ही टकटकी लगाए रहते थे। उनके जन्म समय और संवत् के विषय में निश्चय पूर्वक कुछ कहना कठिन है परन्तु यह सत्य है कि उनका वंश सूर्यवंशी था। उनके पिता का नाम गणेशदास था तथा वे एक सेवा निवृत कर्नल के यहां मुंशी का कार्य करते थे। श्री गणेशदास जी स्वतंत्र चिन्तक थे और मूर्ति पूजा में उन्हें विश्वास नहीं था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उन्हें प्रभावित किया और उन्हीं के कारण वे ईसाई धर्म ग्रहण करने से बच गए। गणेशदास जी के घर पर एक शिशु ने जन्म लिया। यह शिशु हर स्थिति में खुश रहता था इसलिए इसके 'खुशहाल' नाम दिया गया। थोड़ा बड़ा होने पर इन्हें जलालपुर जट्टाँ की पाठशाला में प्रवेश दिलाया गया। पाठशाला में वे एक साधारण छात्र के रूप में रहे। गणित और इतिहास इनके लिए अत्यन्त कठिन विषय थे। परन्तु ये एक एक कर परीक्षा में उत्तीर्ण होते गए और अन्त में कक्षा आठ उत्तीर्ण कर ली। उन दिनों शिक्षा की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी और आठवीं उत्तीर्ण व्यक्ति ही अध्यापक अथवा लिपिक बन जाया करता था।

मुंशी गणेशदास जी ने फिर उन्हें अपने साथ दुकान में लगा लिया। पहले सोडा वाटर बनाने और बेचने का कार्य किया परन्तु उसमें विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई। फिर उन्होंने अपने चुने हुए साथियों के साथ लेकर एक नाटक मण्डली गंठित कर ली जो समाज की नाना समस्याओं को लेकर नाटक और प्रहसन लोगों के सामने पेश करती थी। इनका विवाह गुरांदिता चड्ढा की सुपुत्री मेला देवी के साथ हो गया। गृहस्थ बन जाने पर इन्होंने इस उत्तरदायित्व को स्वीकार किया और अच्छी तरह निभाया भी। दिसम्बर 1907 को इनकी पहली सन्तान का जन्म हुआ और उसका नाम रणवीर सिंह रखा गया। सोडा वाटर के व्यापार में जब ये असफल रहे तो गणेशदास जी ने इनके लिए जुराबें बनाने का कारखाना खोल दिया। कारखानें में काम से छुट्टी मिलते ही ये कहानियां लिखने और कविता लिखने बैठ जाते थे। इन्होंने अपना नाम 'खुशहालचन्द खुर्सन्द' रख लिया। उन्होंने आर्य समाज का प्रचार करने के लिए नवयुवकों की एक मण्डली भी बना ली और समाज के उत्सवों में भाग लने लग गए। रणवीर सिंह के जन्म के कुछ समय बाद ही जलालपुर जट्टाँ आर्य समाज का वार्षिकोत्सव मनाया गया। उत्सव में उपदेश देने के लिए लाहौर से महात्मा हंसराज भी पधारे। शाम को उनका उपदेश हुआ। खुशहालचन्द्र ने उनका व्याख्यान लिख लिया अैर दूसरे दिन प्रातः वे लेख हंसराज जी को दिखाया। लेखक को पढ़कर हंसराज जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और गणेशदास जी से खुशहालचन्द को उनके पास लाहौर भेजने का आग्रह किया। उन्हें आर्य गजट में कार्य करने के लिए आर्य गजट के सम्पादक लाला रामप्रसाद जी के साथ कार्य करने को लगा दिया। लाला रामप्रसाद ने यह सोचकर कि खुशहालचन्द की शिक्षा सम्पादक बनने के लायक नहीं है और इसे अंग्रेज़ी का यथेष्ट ज्ञान भी नहीं है इन्हें हिसाब रखने का कार्य दे दिया। जब महात्मा हंसराज को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने लाला प्रसाद से चर्चा कर इन्हें आर्य गजट का सह-सम्पादक बना दिया। अब उन्होंने स्वाध्याय करना भी प्रारम्भ कर दिया। ज्ञान बढ़ा तो लेखों में भी ज्ञान झलकने लगा। अब उनके नाम से लेख और कहानियां भी प्रकाशित होने लग गईं। फिर पत्रिका में उनका नाम सह-सम्पादक के स्थान पर प्रकाशित होने लग गया। खुशहालचन्द स्वभाव से नम्र थे। आर्य गजट के सम्पादक बन जाने पर भी अपने को देश का एक सेवक और जिज्ञासु ही मानते थे। महात्मा हंसराज के निर्देशन में वे भारतीय संस्कृति को पुर्नजीवित करने में लग गए। वे अपनी पत्नी और पुत्र को भी लाहौर ले आए। निरन्तर स्वाध्याय के कारण वह ज्ञान के भण्डार बन गए। उनके लेखों और कथाओं से प्रेरित होकर कई रूढ़िवादी लोग भी कर्मकाण्ड और बाह्याडम्बर को त्याग कर वैदिक विचारधारा में प्रविष्ट हो गए। आर्य गजट को लोकप्रिय बनाने में वे इतने तल्लीन हो गए कि दिन-रात उसी में लग रहते।

सन् 1909 ई. में पुत्री गायत्री का जन्म हुआ।

जब मुलतान में महामारी का प्रकोप हुआ तो महात्मा हंसराज के आदेश पर रलाराम जी के साथ ये राहत कार्य के लिए मुलतान गए। वहां जाकर उन्होंने अपने स्वयं के जीवन की परवाह न करते हुए रोगियों की सेवा की। सन् 1914 ई. में यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया। उसी वर्ष उनके भाई शान्ति स्वरूप को तपेदिक ने ग्रस लिया। खुशहालचन्द जी भाई को लाहौर लेकर आए और उसकी चिकित्सा प्रारम्भ की। भाई की सेवा में कोई कमी नहीं रखी परन्तु अन्त में शांति स्वरूप को मृत्यु ने लील लिया। सन् 1919 ई. में विश्व युद्ध समाप्त हो गया। किन्तु इसी वर्ष अंग्रेज़ों ने भारत पर ऐसा जुल्म ढाया कि जो बर्बरता की पराकाष्ठा था। जलियाँ वाला बाग में सैंकड़ों निशस्त्र लोगों को घेरकर गोलियों से भून दिया। सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार कर भी अंग्रेज़ों की रक्त पिपासा शान्त नहीं हुई। मार्शल-ला लगाकर निर्दोष लोगों को गोलियों से भूना, जेलों में ठूंसा, दमन और अत्याचार की सब सीमाएं तोड़ दीं। खुशहालचन्द ने अपना समय स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचार धारा को प्रतिपादित करने में लगाया। सन् 1921 ई. में काश्मीर में अकाल पड़ा तो खुशहालचन्द कार्यकर्ताओं की टोली लेकर काश्मीर गए और और अकाल ग्रस्त क्षेत्र में अनाज, वस्त्र और दवाईयों से पीड़ितों की सेवा करने में लग गए।

मालाबार में मुसलमानों ने हिन्दुओं की संहार करना प्रारंभ किया। सैकड़ों पुरुषों को मार डाला और स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया। अंग्रेज़ सरकार ने मोपलाओं को खुली छूट दे दी, किसी को गिरफ्तार भी नहीं किया। महात्मा हंसराज के आदेश पर खुशहालचन्द पीड़ितों को राहत पहुंचाने और उनके पुनर्वास के लिए मालाबार पहुंचे। वे वहां उस समय तक रहे जब तक कि हिन्दुओं को अपनी सुरक्षा का पूर्ण विश्वास नहीं हो गया।

फिर उन्होंने "मिलाप" समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। मिलाप में आर्य समाज और अन्य धार्मिक संस्थाओं के समाचार भी प्रकाशित होने लगे। सन् 1929 ई. में कांग्रेस का लाहौर में अधिवेशन हुआ तो खुशहालचन्द ने मिलाप का विशेषांक निकाला। फिर जब सन् 1930 ई. में कोहाट में साम्प्रदायिक जनसंहार हुआ और मुसलमानों ने हिन्दुओं की दुकाने लूट लीं, मकान जला दिए, औरतों का अपहरण किया और नरसंहार किया तो खुशहालचन्द वहां भी पीड़ितों की सेवा के लिए पहुंच गए। सन् 1934 में बिहार में भूकम्प आया तो वे वहां पहुंचे और राहत कार्य में भाग लिया। सन् 1938 ई. के दिसम्बर के अन्तिम दिनों निजाम हैदराबाद द्वारा हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किया और उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता लगभग छीन ली। इसके विरोध में सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया तो खुशहालचन्द तीसरी टोली के नेता बन कर सत्याग्रही बने और निज़ाम की जेल में सत्याग्रह के अन्त तक रहे।

जेल में इनका परिचय आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी नारायण स्वामी से हुआ। खुशहालचन्द जी ने उनसे उन्हें संन्यास की दीक्षा देने का अनुरोध किया परन्तु नारायण स्वामी ने उन्हें घर पर रहते हुए ही पहले सन्यास का अभ्यास करने को कहा। इसके बाद उन्होंने अपना जीवन ही बदल दिया। धरती पर ही तकिया छोड़कर सोने लग गए। पत्रकारिता में लगातार उन्नति करते गए। वे अन्तर्मुखी बन गए। मौन साधक बन गए। भोजन भी सादा लेने लग गए। चेतन स्वरूप योगी से भेंट की तो उनसे योग समाधि लगाना सीखा। अब वे शरीर और आत्मा में भेद करने लग गए। फिर वे समय-समय पर अज्ञातवास करने लगे। महीनों तक अज्ञातवास में मौन धारण कर परमात्मा की उपासना में ही अपना सम्पूर्ण समय लगाने लग गए। फिर अंग्रेज़ों ने मुसलमानों की पीठ ठोंकी। मुसलमानों ने पाकिस्तान की मांग के साथ Direct action की घोषणा कर दी। पंजाब और बंगाल में चुन चुन कर हिन्दुओं का कत्लेआम प्रारम्भ हो गया। हिन्दुओं की दुकानें लूट ली गईं, मकानों में आग लगा दी गई, बहू बेटियों के साथ बलात्कार किया गया। उन्हें नग्न कर जुलूस निकाले

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

तंत्र-मंत्र का पाखण्ड

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आज जैसा कि एक अकेला आर्य समाज अन्धविश्वास व पाखण्डों के विरुद्ध आवाज़ उठा रहा है। उधर सहस्रों ऐसे गुरु उत्पन्न हो गये हैं जो ताँत्रिक कर्म, फलित ज्योतिष व पाखण्डों को बढ़ावा दे रहे हैं जिससे समाज अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है।

किसी कालोनी, ग्राम या नगर में वर्ष में एक बार वेद प्रचार कार्यक्रम होता है तो उसके विरूद्ध वहां वर्ष में सैंकड़ों कार्यक्रम देवी जागरण व गुरुडमवादियों के हो जाते हैं। अनेक घरों में गुरुओं के पैरों के निशान वाली तसवीर, गुरुओं के खड़ाऊँ की छाप। गुरुओं के भाँति-भाँति आकार प्रकार की चित्रकारी के बड़े-बड़े चित्र टंगे मिल जाऐंगे।

उधर ताँत्रिकों का कार्य तीव्र स्तर पर चल रहा है। ताँत्रिक रात्रि को शमशानों, नदियों के तट पर जा कर विभिन्न प्रकार के क्रियाकर्म करते हैं। श्मशान की राख अपनी देह पर लगाते व वहाँ से अस्थियाँ उठाकर एक तार में पिरों कर अपने गले में लटका लेते हैं, बाँहों पर सिर में छोटी-छोटी अस्थियों की माला बाँध लेते हैं तथा श्मशानों आदि से अस्थियाँ उठाकर अपने निवास पर सजा कर रखते हैं तथा जन सामान्य में प्रचार करते हैं ऐसा कोई कार्य नहीं जो ताँत्रिकों के यहाँ न होता हो। समस्त बाधाओं को दूर करने का आश्वासन यहाँ दिया जाता है। समस्त कार्यों को पूरा करने का विश्वास यहाँ दिलाया जाता है। अनपढ़, मूर्ख, पिछड़े हुए लोग यहाँ आते हैं भीड़ लगी रहती है। यही नहीं भारत में तो अनेक पढ़े लिखे डिग्रीधारी भी इस पाखण्ड जाल में फँस कर वहाँ ऐसे ताँत्रिकों की शरण में पहुँच जाते हैं। ताँत्रिकों का कार्य एक अँध विश्वास है। न किसी कार्य की इससे सिद्धि होती है न कोई कार्य पूर्ण होता है परंतु जो अँधविश्वासी है वही यहाँ पहुँच जाते हैं। ताँत्रिक लोग संतान होने का दावा करते हैं। जो महिलाएं संतानहीन हैं उन्हें बहकाते हैं तथा संतान के लिए बच्चों को उठाकर बलि तक दिलवा देते हैं जो कि घृणास्पद, अमानवीय कुकृत्य है, पाप कर्म है। जब किसी का कोई बच्चा खो जाता है तो सर्वप्रथम ताँत्रिकों की करतूत की ओर ही सम्भावना की जाती है, तत्पश्चात् अपहरण व आपसी शत्रुता की सम्भावना होती है।

लोगों को घर बनने, नौकरी लगने, सास का बहू पर वशीकरण, व बहू का सास पर वशीकरण का दावा करने हेतु गंडा, ताबीज, धागा, बाँधने को देते हैं तथा बोतल में पानी भर कर देते हैं और कहते हैं कि मंत्र फूँक कर या पढ़ कर पानी दिया है इसमें से थोड़ा-थोड़ा जिसे पिलाओगे वह तुम्हारे वश में हो जाएगा। हालाँकि इस पानी में कोई मंत्र आदि नहीं होता अपितु कोई हानिकारक विषाक्त द्रव्य अवश्य मिला होता है जिसे यह पानी पिलाया जाता है उसकी सोचने समझने की शक्ति (विवेक) धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। अब पत्नी पति को पिलाए या सास बहू को वह उसकी सत्य-असत्य सब बातों को मानने लगता है।

ग्रहबाधा बताकर भयभीत कर देते हैं और शनि, वृहस्पति ग्रह, सिर पर आने की बात कहते हैं, भूत-प्रेत आने की बात कहते हैं, किसी का भी नाम लेकर बताते हैं कि तुम वहाँ कब्र के पास से निकले थे तब वहाँ से फलाँ व्यक्ति की हवा तुम पर आ गयी। पहले काल सर्प दोष का भय दिखाते हैं फिर उसको उतारने के लिए धन खींचते हैं।

मानसिक रूप से विक्षिप्तों का तो और भी बुरा हाल है। उन पर भूत-प्रेत, बयार, हवा, पिशाच बताकर उन्हें मारते-पीटते, चीखते-चिल्लाते उनसे कुछ का कुछ कहलाते कभी नचाते, भाँति-भाँति की डरावनी आवाजें उनसे निकलवाते हैं ऐसे रोगी जिनका मानसिक संतुलन ही ठीक नहीं कुछ भी उनके प्रश्नों के आगे बोलते रहते हैं।

ताँत्रिकों के पास कोई भी रोगी जाय तो उस पर ऊपर या चक्कर ही बताते हैं और तरह-तरह की गूगल, लौंग, अगर-तगर आदि को जला धूँआ कर उसके नाक के आगे बार-बार झटके से करते हैं जिससे रोगी का श्वास भी घटने लगता है आँखों में अश्रु तक आ जाते हैं स्थिति और विकृत हो जाती है।

भारत भर में ताँत्रिकों की भरमार है और इनसे मूर्ख व भोली जनता को शारीरिक एवं आर्थिक रूप से अत्यधिक क्षति उठानी पड़ती है कभी-कभी तो प्राण भी चले जाते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इन अँधविश्वासों व पाखण्डों की पोल खोली व जनता को समझाया कि यह ताँत्रिक कर्म व फलित ज्योतिष, मारण, उच्चाटन, वशीकरण यह सब दुष्कर्म हैं अँध विश्वास हैं मूर्खों के कार्य हैं। ग्रहों के विषय है जैसा कि ताँत्रिक कहते हैं कि शनि, सूर्य आदि क्रूर ग्रह किसी पर बताते हैं तो इसके लिए बताया है कि **''जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं, वे ताप व प्रकाश आदि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते।''** -स.प्र. द्वितीय समु.

डोरा ताबीज मंत्र पढ़कर जीवन बचाने को कहने वाले ताँत्रिकों के लिए कहा है-

''क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे! तुम्हारे इस प्रकार करने से भी कितने ही लड़के मर जाते हैं और तुम्हारे घर में भी मर जाते हैं और क्या तुम मरण से बच सकोगे? -स.प्र. द्वितीय समु.

ताँत्रिकों के विरूद्ध आर्यों को अभियान चलाना चाहिए हालाँकि बलिप्रथा, सतीप्रथा के प्रति कानून बन गया परंतु जो बलि चढ़वाने, कराने वाले हैं वह ताँत्रिक ही हैं जो आज भी बच्चों आदि की बलि यदा कदा कराते पकड़े जाते हैं। यह सामाजिक दुष्कर्म है, पाप है। इसके मूल में ग्राम, नगर महानगरों में स्थान-स्थान पर जनता का मूर्ख बनाते वहीं ताँत्रिक हैं जो जनता के भोले अनपढ़ लोगों को मूर्ख बना चालाकी से धन ऐंठते व अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, चमत्कार दिखाकर जनता को ठगते हैं। आज भी तांत्रिकों के अनेक मठ मंदिर हैं। मेलों में भी यह धूनी लगाकर बैठे मिल जाते हैं जनता को झाड़ फूँक में फंसाते फिरते हैं।

गली नं. 2, चन्द्रलोक कॉलोनी
खुरजा-203131 (उ.प्र.)

☞ पृष्ठ 08 का शेष

महात्मा आनन्द स्वामी ...

गए। उनके स्तन काट दिए गए। लोग अपना सामान समेट कर भागने लगे। जो भागने में सफल नहीं हुए उन्हें बर्बरता से कत्ल किया गया। लगभग 17 लाख हिन्दू मारे गए, 5 लाख युवतियों को अरब देशों में बेच दिया गया और 55 लाख हिन्दुओं को खदेड़ कर भारत में शरणार्थियों के रूप में भेजा गया। अन्त में देश के दो टुकड़े कर स्वतंत्र कर दिया गया। लाहौर में मिलाप कार्यालय जला दिया गया। खुशहालचन्द जी को सब कुछ वही छोड़कर भारत आना पड़ा। वे परिवार सहित दिल्ली आ गए। कुछ दिनों बाद ही एक कट्टर हिन्दू नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी।

सन् 1949 के पहले दिसम्बर को खुशहाल चन्द जी ने स्वामी आत्मानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ले ली। संन्यास ग्रहण करने के बाद उन्होंने अपना शेष सम्पूर्ण जीवन (लगभग 28 वर्ष) वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लगाया। उन्होंने तीर्थाटन करते हुए सम्पूर्ण देश में परिभ्रमण किया। वे हिमालय के दुर्गम स्थलों पर भी गए। कैलाश पर्वत और मानसरोवर पर भी पहुंचे। हिमालय की यात्रा में उन्हें कई योगियों के दर्शन भी हुए। योगियों से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला। उन्होंने फिर से देश में भ्रमण कर धर्म का प्रचार आरम्भ किया। हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री ने उनका स्वागत किया। उनका यश फैलने लगा। विदेशों में उन्हें आमंत्रित किया जाने लगा। उन्होंने मोरीशस, मलेशिया, सिंगापुर, केन्या आदि देशों की यात्रा की और वहां भी वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनके उपदेश हृदयग्राही होते थे, वे अत्यन्त सरल भाषा में अपनी बात कहते थे और अपने कथन के पक्ष में उदाहरणों की झड़ी लगा देते थे। अब वे ईश्वर अल्लाह एक समान की बात करते थे। मलेशिया की यात्रा के बाद वे फिज़ी और न्यूजीलैण्ड भी गए। उनका सर्वत्र सम्मान हुआ और लोगों ने उन्हें आदर और प्रेम से सुना। वे आस्ट्रेलिया भी गए। यात्राओं में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने महामंत्र, दो रास्ते, प्रभुदर्शन, और एक ही रास्ता आदि बीसियों पुस्तकें भी लिख दीं। लगातार परिभ्रमण और अथक कार्य से अन्त में उनका शरीर थक गया और 24 अक्टूबर 1977 को उन्होंने देह त्याग दी। वे तो चले गए परन्तु उनके द्वारा रचित ग्रन्थ हज़ारों वर्षों तक जनता का मार्ग दर्शन करते रहेंगे। इतिशम्।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)

पत्र/कविता

आशा है उच्च शिक्षा में चल रही अराजकता पर रोक लगेगी

मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर को मैं बधाई दिए बिना नहीं रह सकता। अब वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का नाम बदलकर उच्च शिक्षा आयोग कर रहे हैं। इसका नाम ही नहीं बदलेगा, अब इसका काम भी बदलेगा। जहां तक नाम बदलने का सवाल है, मानव संसाधन मंत्रालय का नाम सबसे पहले बदलना चाहिए। शिक्षा मंत्रालय का यह नाम किसी अफसर ने राजीव गांधी को सुझाया और उन्होंने प्रधानमंत्री की शपथ लेने के बाद श्री पी.वी. नरसिंहराव को मानव संसाधन मंत्री बना दिया। मैंने राव साहब को उसी वक्त राष्ट्रपति भवन में कहा आप अब मनुष्यों को साधन बनवाएंगे क्या ? वह तो साध्य होना चाहिए। उनके बाद अर्जुनसिंह और डॉ. मु.म. जोशी जैसे लोग भी इस बेढंगें नाम को अपने कंधे पर ढोते रहे। अब शायद मोदी और जावड़ेकर इस गल्ती को सुधार लें।

अब जो उच्च शिक्षा आयोग बन रहा है, इसका एक ही मुख्य लक्ष्य है – देश की उच्च शिक्षा में सुधार करना। दान और अनुदान आदि देने का काम अब मंत्रालय करेगा लेकिन यह आयोग देश के सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालयों, कालेजों, शोध–केंद्रों, प्रशिक्षण केंद्रों आदि पर कड़ी निगरानी रखेगा और जो भी संस्था निर्धारित स्तरों का उल्लंघन करेगी, उन्हें बंद करने, उन पर जुर्माना करने और उनके संचालकों को तीन साल तक की सजा देने का काम करेगी। अभी तो उसे सिर्फ उनकी मान्यता समाप्त करने भर का अधिकार है। आशा है, यह प्रावधान उच्च शिक्षा में चल रही अराजकता पर रोक लगाएगा। विश्वविद्यालयों की वित्तीय व्यवस्था अब सरकार के हाथ में होगी। कहीं ऐसा न हो कि उनकी स्वायता का गला घुट जाए ?

लेकिन असली सवाल यह है कि हमारी सरकार के पास उच्च शिक्षा का कोई अपना नक्शा भी है या नहीं ? हमारे विश्वविद्यालयों की विश्व में कोई गिनती नहीं है। हमारे जिलों के बराबर जो देश हैं, उनके विश्वविद्यालयों के आगे हमारे सैकड़ों विवि पानी भरते नजर आते हैं। वे विवि नकलचियों के अड्डे नहीं हैं। वे मौलिक अनुसंधान करते हैं। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्रों में वे अपने देश को नई दिशा देते हैं। वे अपनी भाषाओं में उच्च शिक्षा और उच्च शोध करते हैं। यदि राष्ट्रवादियों की यह सरकार नकल को असल में बदल सके तो क्या कहने? यदि सरकार शेष एक साल में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कुछ क्रांतिकारी काम करती है तो उसके लोग उसे याद रखेंगे और उसका आभार मानेंगे।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
ईमेल– dr.vaidik@gmail.com

जागो अब वैदिक विद्वानों

जागो अब वैदिक विद्वानों, मिलकर कदम बढ़ाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
प्यारा आर्यवर्त हमारा, दुनिया में था नामी।
विद्या बल में, रण कौशल में, था वह जग का स्वामी।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
गौतम, कपिल, कणाद जैमिनी, ऋषि महान यहाँ थे।
राम, कृष्ण, बलराम, भीम जैसे बलवान यहाँ थे।।
वीर विक्रमादित्य भोज की, गौरव गाथा गाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
ऋषियों को प्यारे भारत में पाप गया बढ़ भारी।
लाखों गऊएं बिन खता निशिदिन जाती हैं मारी।।
सांगा, बन्दा, नलवा बन, दुष्टों के शीष उड़ओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
देवभूमि भारत में फिरते हैं लाखों पाखण्डी।
भोली–भाली जनता को, ठगते हैं धूर्त उदण्डी।।
पोल खोल दो शैतानों की, लेखराम बन जाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
श्रद्धानन्द, लाजपत जैसे, नहीं रहे अब नेता।
कुर्सी के हैं दास, स्वार्थी, बनते वीर विजेता।।
सत्य अहिंसा सदाचार का, इनको पाठ पढ़ाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
भारत स्वर्ग बनाना है तो, बात हमारी मानो।
सुख पाओगे हे मित्रो तुम, भला बुरा पहचानो।।
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द की, जय–जयकार मनाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।
हो जीवन निर्माण दोस्तो, भले काम कर जाओ।
नन्द लाल 'निर्भय' तुम अपना जीवन सफल बनाओ।।
जगत् पिता उस जगदीश्वर को कभी नहीं बिसराओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, तुम वैदिक धर्म निभाओ।।

पं. नन्द लाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
ग्राम बहीन, पलवल, मो. 9813845774

आनन्द स्वामी जी मेरी डायरी के एक पन्ने पर

मैं 1952 से प्रतिदिन डायरी लिखता हूँ। मैं अपनी डायरी के आधार पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ। जब 24–10–1977 का दिन आया तो उसमें लिखा था कि आज आनन्द स्वामी जी का स्वर्गवास हुआ। उनकी शवयात्रा में हजारों की संख्या में आर्य समाज के नेता और जनता शवयात्रा में शामिल थे। मैं भी शवयात्रा में शामिल था।

जब हम जामामस्जिद के पास पहुँचे तब मुसलमानों का एक जत्था शवयात्रा में शामिल हुआ। शिवमंदिर के पास कुछ सरदार भी शामिल हुए। जब हम निगम बोधघाट पहुँचे तो मैंने पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी जी को अपने कुछ साथियों के साथ देखा। श्री पूनम सूरी जी के पिता उनसे बात कर रहे थे। उन्होंने चूडीदार पाजामा तथा लम्बा कुर्ता पहन रखा था। मुझे लगता है कि स्वामी जी का इन्दिरा जी के परिवार से सम्बन्ध रहा होगा या यह उनकी आध्यात्मिक और सामाजिक छवि के कारण था। मुझे स्वामी जी के साथ 1973 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भारीशस अधिवेशन में साथ जाने का अवसर मिला। स्वामी के कई बार प्रवचन सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

मामचन्द रिवाड़िया
9212003162

****

गो–घृत संजीवनी है शरीर के लिए

* गो–घृत शीतकाल में वृद्धजनों को गरम दूध में मिलाकर पीने से लाभ होगा।
* शीतकाल में नवजात शिशुओं को निमोनिया से बचाव हेतु छाती पर गो–घृत की मालिश श्रेष्ठ होती है।
* त्वचा के जलने पर गो–घृत लगावें लाभ होगा।
* समस्त भोजन पकाने में केवल गो–घृत का प्रयोग उच्च रक्तचाप व पारिवारिक शान्ति प्रदान करता है।
* सौ ग्राम गो–घृत के उपयोग का अर्थ है कि आप दस गायों का पालन कर रहे हैं।
* गो–घृत और मिश्री, सौंफ का सम भाग मिश्रण 200 ग्राम गर्म दूध में प्रयोग करने से शरीर चुस्त रहता है।
* रात्रि में सोते समय आँखों की पलकों पर गो–घृत की मालिश करने से नींद अच्छी आती है तथा आंखों की रोगों से दूरी बनाती है।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट
अमरोहा–244221
9927064104

आर्य कन्या विद्यालय, अलवर में प्रतिभाशाली छात्राएँ हुई सम्मानित

विद्यालय परिसर वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के सत्र प्रारम्भ एवं सैकण्डरी व सैकण्डरी परीक्षा 2018 प्रतिभाशाली छात्राओं के सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। समारोह प्रातः 10.30 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसके मुख्य यजमान माननीय श्री सज्जन सिंह उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता कोठारी रहे। सत्रारम्भ कार्यक्रम का आरम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने विद्यालय समिति के गौरवमयी परिचय द्वारा विद्यालय की परम्परा व आदर्शों के बारे में बताया।

मंचासीन सभी अतिथियों द्वारा प्रतिभा

सम्पन्न विद्याथियों को सम्मान प्रतीक देकर सम्मानित किया गया। उसके पश्चात् विद्यालय की छात्राओं द्वारा देशभक्ति गीत "अपने इस वतन पर अभिमान" प्रस्तुत किया गया।

मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधिपति लोकायुक्त राजस्थान श्री सज्जन सिंह कोठारी ने उद्‌बोधन में कहा कि बच्चों का सानिध्य सदैव उर्जावान व सक्रिय, प्रफुल्लित बनाए रखता है। भव्य व गरिमापूर्ण समारोह के आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा की। मनुष्य व पशु के अन्तर को विवेक परोपकार के माध्यम से समझाया। संस्था द्वारा नारी शिक्षा की अग्रणी भूमिका की सराहना की। वेद मंत्र प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म से बोले, वाणी से नही को चरितार्थ किया है।

विशिष्ट अतिथि अनिता कोठारी ने स्नेहमयी उद्‌बोधन में संस्था से अपने लगाव को शब्दों में व्यक्त किया। स्वयं से प्रतियोगिता करते हुए बेहतर करने का प्रयास करते रहें। स्वयं को जानते हुए एक समूह का सदस्य बनना और बहुत कुछ जानना, संघर्ष को जीतना ही जीवन है। अवसाद से स्वयं निकलते हुए अपने दोस्तों के साथ बिताएँ और अपने दोस्तों को भी अवसाद से तुरंत निकाले व सहयोग करें।

डी.ए.वी. देहरा में योग-दिवस का आयोजन

डी.ए.वी. देहरा में दिनाँक 21.06.2018 अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर योग–दिवस का आयोजन किया गया, जिसका सञ्चालन जाने माने योग शिक्षक श्री सतपाल वर्मा एवं उनके साथियों द्वारा किया गया। विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों ने भी इसमें बढ़–चढ़ कर भाग लिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेश शर्मा ने

छात्रों को योग की उपयोगिता से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार योग द्वारा रोगों को दूर भगाया जा सकता है योग हमारे शारीरिक, बौधिक एवं मानसिक विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है। प्रधानाचार्य ने प्रबंधक समिति के सदस्यों व योग प्रशिक्षकों का धन्यवाद किया एवं सभी को जीवन में योग विद्या को धारण करने के लिए प्रेरित किया।

कुष्ट रोगियों की बस्ती में आर्यसमाज ने बाँटी खाद्यान्न सामग्री

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा वीर सावरकर नगर स्थित कुष्ट रोगियों की बस्ती में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया।

आर्य समाज के जिलासभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज कोटा के प्रतिनिधिमंडल ने कुष्ट रोगियों की बस्ती में जाकर खाद्य सामग्री बांटी जिसमें बिस्किट तथा नमकीन के पैकेट वितरित किए गए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य अतिथि के रूप में उपस्थित

रहे। कुष्ट रोगियों के मध्य जाकर इस प्रकार से खाद्य सामग्री इत्यादि बाँटने को उन्होंने परोपकार का सर्वश्रेष्ठ कार्य बतलाया है। जरूरतमंद की आवश्यकताओं की पूर्ति सामाजिक दायित्व होती है। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि आर्य समाज कोटा जिला के माध्यम से इस दायित्व को बखूबी निभाया जा रहा है।

इस अवसर पर कोटा के डी.ए.वी. के धर्म शिक्षक आचार्य शोभाराम आर्य, महावीर नगर आर्य समाज के प्रधान रामचरण आर्य, राधाबल्लभ राठौर व अन्य आर्यजन उपस्थित रहे।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 11\12-07-2018

एम.आर.डी.ए.वी. सोलन ने मनाया पर्यावरण सप्ताह

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में प्रधानाचार्या अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन में एम आर ए डी ए वी सोलन में दिनांक 05–06–2018 से 11–06–2018 को *"बीट प्लास्टिक पोलियूशन"* के अन्तर्गत पर्यावरण सप्ताह का आयोजन किया गया। इस पर्यावरण सप्ताह को मनाने का उद्देश्य था वातावरण को प्लास्टिक मुक्त तथा स्वच्छ बनाना। प्रधानाचार्या अनुपमा शर्मा ने बच्चों को प्लास्टिक से होने वाली हानियों से अवगत करवाया और बच्चों को प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग करने की सलाह दी।

सर्वप्रथम बच्चों द्वारा इस कार्यक्रम से संबन्धित एक लघुनाटिका प्रस्तुत की गई। जिसमें प्राची, अधिराज, ध्रुव, वृतिका, देवांश, आस्था, नाम्या, अंश, योगेश, दिया, सृष्टि आदि बच्चों ने भाग लिया। लघुनाटिका के माध्यम से बच्चों ने संदेश दिया कि प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि आने वाला समय खुशहाल तथा स्वास्थ्यवर्धक हो। बच्चों द्वारा प्लास्टिक के रोक से संबन्धित एक राष्ट्रीय गीत पर डांस किया जिसमें समायरा चौहान, नम्रता, मिताली, तान्या, प्रियांशी कशिश, महक ने भाग लिया।

विद्यालय परिसर से न्यू बस स्टैंड तक रैली निकाली गई तथा आस पास की जगहों को भी साफ किया गया।

प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने कहा आज आवश्यकता है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की। उन्होंने ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हे इसी तरह जन कल्याण के कार्य करते रहने की प्रेरणा दी।

डी.ए.वी. सैक्टर -14, गुरुग्राम में हुआ उत्कृष्टता- सम्मान समारोह

डी.ए.वी. सैक्टर–14, गुडगाँव के तत्वावधान में बारहवीं तथा दसवीं कक्षा के छात्रों के परीक्षा परिणाम में उत्तम प्रदर्शन हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कक्षा बारहवीं के 147 छात्र जिन्होंने 90 प्रतिशत से अधिक अंक तथा कक्षा दसवीं के छात्र जिन्होंने 95 प्रतिशत से अधिक अंक बोर्ड परीक्षाओं में अर्जित किए, वे समारोह के चमकते सितारे थे।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष तथा विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रबोध महाजन, डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष तथा विद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष श्री टी० आर० गुप्ता, डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के उपाध्यक्ष श्री मोहन लाल विद्यालय के प्रबंधक श्री आर०आर०भल्ला के साथ स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति के सदस्यों ने कार्यक्रम की शोभा का संवर्धन किया।

अभिवादन उद्बोधन में विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा एरी ने छात्रों के परीक्षा परिणाम में उत्तम प्रदर्शन का विस्तृत विवरण देते हुए बताया कि कक्षा बारहवीं का गुणात्मक प्रदर्शन सूचकांक (QPI) 88.35 प्रतिशत तथा कक्षा दसवीं का 85.96 प्रतिशत रहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रबोध महाजन ने छात्रों के उत्तम प्रदर्शन पर उन्हें बधाई दी तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए प्रेरक व्याख्यान दिया। उन्होंने उद्यम, बुद्धि, साहस, शौर्य, संयम तथा पराक्रम को सफलता का मूल मंत्र बताया। साथ ही उन्होंने सी.बी.एस.ई. विद्यालयों पर किए गए एक सर्वेक्षण के परिणामों को सांझा करते हुए बताया कि डी.ए.वी. सैक्टर–14 राष्ट्र के सभी विद्यालयों में 28वें स्थान पर है। श्री टी०आर०गुप्ता ने भी वैदिक शिक्षा को नैतिक मूल्यों का आधार बताते हुए छात्रों को आशीर्वचनों के साथ शुभकामनाएँ दीं।

सभागार में उपस्थित अतिथियों के द्वारा सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को ट्रॉफी तथा छात्रवृत्ति प्रदान करके उनका उत्साहवर्धन किया। अंत में राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम का समापन किया गया।

डी.ए.वी. धर्मशिक्षक ने निराश्रित बच्चों के साथ मनाया अपना जन्मदिन

डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने रंगबाड़ी स्थित मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के मध्य जाकर अपनी पत्नी व पुत्र के साथ अपना 49वाँ जन्मदिन मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के बच्चों के द्वारा गायत्री मंत्र के सस्वर गायन एवं भजन से हुआ। इस अवसर पर शोभाराम आर्य ने संस्थान के बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में कभी निराश मत होना, कभी अपने आप को हीन मत समझना क्योंकि समाज में ऐसे अनेक लोग है जो आपके जीवन के स्तर को उठाने के विषय में लगातार सोचते रहते है।

इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं आर.सी. आर्य ने शोभाराम आर्य को जन्मदिन पर शुभकामनाऐं दीं। साथ ही यह विश्वास भी व्यक्त किया कि ईश्वर करे कि श्री शोभा राम आर्य की समाजोपयोगी कार्यों के प्रति रुचि इसी प्रकार न केवल बनी रहे बल्कि वे इससे भी उच्च स्थिति को प्राप्त करें।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के सभी बच्चों को उपहार दिए गए तथा अन्य अध्यापकों, कर्मियों, अथितियों के साथ सभी ने जलपान किया। संस्थान की डॉ. अंजलि निर्भीक ने आर्य समाज एवं अन्य सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**